कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 24 से 30 मार्च 2026 ● वर्ष-26 ● अंक-44 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

जायद फसल एवं कृषि यंत्र विशेषांक

कृषक दूत पढ़ने के लिए QR कोड को स्केन करें।

अंदर के पृष्ठों में पढ़िये

- ♦ जायद मूंग की खेती-फायदा भरपूर देती
- ♦ जायद मूंग में रोग प्रबंधन
- ♦ जायद तिल को रोगों से बचायें
- ♦ उन्नत खेती में पौध संरक्षण यंत्रों की भूमिका

हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक दूत के सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, लेखकों, शुभचिंतकों को चैत्र नवरात्रि, गुड़ी पड़वा, नववर्ष एवं विक्रम संवत 2083 की हार्दिक शुभकामनाएं।

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE
TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

किसानों की आय और सुरक्षा पर सरकार का फोकस : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्र सरकार किसानों की आय बढ़ाने और उन्हें जोखिम से सुरक्षित रखने के लिए लगातार बड़े कदम उठा रही है। लोकसभा में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि सरकार फसल विविधीकरण, एमएसपी पर रिकॉर्ड खरीद, फसल बीमा में सुधार और डिजिटल निगरानी जैसे उपायों के जरिए किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने पर काम कर रही है।

श्री चौहान ने कहा कि सरकार तंबाकू जैसी हानिकारक फसलों के स्थान पर किसानों को वैकल्पिक नकदी फसलें अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। इनमें मक्का, मिर्च, शकरकंद, कपास, आलू, चिया, सोयाबीन, ज्वार, मूंगफली और गन्ना जैसी फसलें शामिल हैं। इससे किसानों की आमदनी सुरक्षित और स्थिर रखने का प्रयास किया जा रहा है। देश में अधिकांश किसानों के पास छोटी जमीन है, जिसे देखते हुए सरकार ने इंटीग्रेटेड फार्मिंग मॉडल तैयार किए हैं। इन मॉडलों के तहत किसान फसल उत्पादन, पशुपालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन और बागवानी एक साथ कर सकते हैं, जिससे सालभर आय बनी रहती है।

श्री चौहान ने कहा कि सरकार ने गेहूं, धान, दलहन और तिलहन समेत कई फसलों के एमएसपी में वृद्धि की है और इस सीजन में रिकॉर्ड खरीद की जा रही है। खास बात यह है कि तुअर, मसूर और उड़द जैसी दालों की पूरी खरीद की गारंटी दी जा रही है, जिससे किसानों को बाजार में नुकसान नहीं उठाना पड़े। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में बड़े सुधार किए गए हैं। अब व्यक्तिगत नुकसान पर भी मुआवजा मिलेगा। 21 दिनों के भीतर भुगतान अनिवार्य किया गया है देरी होने पर 12 प्रतिशत ब्याज के साथ भुगतान मिलेगा। इससे किसानों को समय पर राहत मिल सकेगी। सरकार ने कृषि रक्षक पोर्टल जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए योजनाओं की निगरानी मजबूत की है। किसी भी गड़बड़ी पर तुरंत जांच और कार्रवाई की जा रही है। डीबीटी के माध्यम से किसानों के खातों में सीधे बीमा राशि ट्रांसफर की जा रही है। सरकार की ये पहलें किसानों को न केवल बेहतर आय दिलाने में मदद कर रही हैं, बल्कि खेती को अधिक सुरक्षित और टिकाऊ भी बना रही हैं।

200 करोड़ से बनेगा 'बनाना क्लस्टर'

कृषि क्षेत्र में बदलाव की दिशा में बड़ा कदम : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने गुड़ी पड़वा के मौके पर जलगांव में केला उगाने वाले किसानों से मुलाकात की और उनसे बातचीत की। इस बीच उन्होंने जिले में बनाना क्लस्टर बनाने का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों की आय बढ़ाने और खेती से जुड़ी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए पूरी तरह काम कर रही है।

श्री चौहान ने बताया कि जलगांव में लंबे समय से प्रस्तावित बनाना क्लस्टर परियोजना को स्वीकृति मिल चुकी है और इसे 200 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जा रहा है। इस क्लस्टर के अंतर्गत गुड एग्रीकल्चर प्रैक्टिस, मैकेनाइजेशन, बायो-कंट्रोल, फ्रूट कवर और प्री-कूलिंग जैसी सुविधाएं विकसित की जाएगी। साथ ही कोल्ड स्टोरेज, राइपनिंग चेंबर, रेफ्रिजरेटेड वैन, प्रोसेसिंग और निर्यात से जुड़ी अधोसंरचना भी तैयार की जाएगी।

उन्होंने यह भी कहा कि केला जैसी फसलें एमएसपी पर खरीदकर लंबे समय तक रखी नहीं की जा सकती है, इसलिए सरकार एक ऐसे वैकल्पिक मॉडल पर विचार कर रही है, जिसमें बाजार मूल्य अत्यधिक कम होने पर किसानों को लागत या निर्धारित मॉडल मूल्य और बाजार भाव के बीच का अंतर दिया जा सके। श्री चौहान ने अत्यधिक रासायनिक खाद और कीटनाशकों के उपयोग से मिट्टी की बिगड़ती सेहत पर चिंता जताते हुए किसानों से अपील की कि वे प्राकृतिक खेती को अपनाएं और शुरुआत छोटे स्तर पर प्रयोग के रूप में करें।

देश के 40 फीसदी से ज्यादा बड़े बांध आधे खाली

अब बारिश के अलर्ट से थोड़ी राहत की उम्मीद

नई दिल्ली। गर्मी और कम बारिश का असर जल स्रोतों पर देखने को मिला है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग और केंद्रीय जल आयोग के ताजा आंकड़ों ने चिंता बढ़ाने का काम किया है। रिपोर्ट के अनुसार, देश के 166 बड़े बांधों में से 40 फीसदी इस समय आधे से भी कम भरे हुए हैं। वहीं बड़े बांधों में पानी का स्तर तेजी से गिरकर महज 51 प्रतिशत पर आ गया है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह इस साल की शुरुआत से ही देश के 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सों में उम्मीद से कम बारिश होना है।

आईएमडी के आंकड़ों पर नजर डालें तो देश के 726 जिलों में से लगभग 78 प्रतिशत इलाकों में 1 मार्च के बाद से या तो बहुत कम बारिश हुई है या बिल्कुल सूखा रहा है। पानी की इसी कमी के चलते बांधों में पानी जमा नहीं हो पा रहा है और जो स्टॉक पहले से था, वह भी तेजी से खत्म हो रहा है।

महाराष्ट्र और गुजरात के जलाशयों में अभी 60 से 63 प्रतिशत के करीब पानी है। मध्य प्रदेश में 59 प्रतिशत और छत्तीसगढ़ में जल स्तर 71 प्रतिशत के करीब बना हुआ है, जो तुलनात्मक रूप से बेहतर है। उत्तर प्रदेश में 51 प्रतिशत और उत्तराखंड में बांधों का स्तर 43 प्रतिशत तक है। देश के 166 प्रमुख बांधों में से केवल झारखंड का जखेत हिल जलाशय ही इस समय अपनी पूरी क्षमता तक भरा हुआ है। वहीं, 39 बांध ऐसे हैं जहाँ पानी 40 प्रतिशत से भी कम बचा है।

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने की बारिश-ओलावृष्टि से फसल नुकसान की समीक्षा

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में कृषि भवन में देश के कृषि क्षेत्र की समग्र स्थिति की समीक्षा की। हाल के दिनों में कई राज्यों में तेज बारिश, ओलावृष्टि और प्रतिकूल मौसम के कारण फसलों को संभावित नुकसान के मद्देनजर काफी अहम रही। बैठक में किसानों को हुए संभावित नुकसान, उनकी तत्काल जरूरतों, बीमा दावों की प्रक्रिया और राहत व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा की गई। श्री चौहान ने कहा कि सरकार का फोकस सिर्फ उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि फसल-क्षति के वैज्ञानिक आकलन, बीमा क्लेम के सही निपटान और किसानों को समय पर राहत पहुंचाने पर भी बराबर जोर दिया जा रहा है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

हर विधानसभा क्षेत्र में होंगे कृषि सम्मेलन

किराये पर कृषि यंत्र और शून्य प्रतिशत ब्याज पर मिलेगा फसल ऋण : डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषक कल्याण वर्ष 2026 में विभिन्न विभाग मिलकर कृषि विकास और कृषक कल्याण योजनाओं को धरातल पर उतारने का कार्य करेंगे। किसानों की आय बढ़ाने के लिए सभी उपायों पर क्रियान्वयन तेज किया जाएगा। कृषक कल्याण वर्ष का लाभ किसानों के परिवारों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। मध्यप्रदेश, देश का इकलौता राज्य है, जो 5 रुपए में किसानों को बिजली का कनेक्शन उपलब्ध करवा रहा है। ये किसानों के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डॉ. यादव कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में कृषक कल्याण वर्ष में सक्रिय सहभागिता जुटाने के उद्देश्य से आयोजित किए गए कृषि अभिमुखीकरण कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को नई तकनीक और सरकारी योजनाओं की जानकारी देने के लिए हर विधानसभा क्षेत्र में कृषि सम्मेलन आयोजित होंगे। इसके लिए कृषि विभाग हर विधानसभा क्षेत्र को 5 लाख रुपये देगा, जिससे विधायक अपने क्षेत्र में 4 से 5 सम्मेलन करा सकेंगे। छोटे और लघु किसानों के लिए अब विधानसभा क्षेत्रों में कृषि यंत्रों की दुकानें खोली जाएंगी। यहां से किसान ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और अन्य आधुनिक यंत्र किराये पर ले सकेंगे। इससे खेती की लागत घटेगी और उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि पिछले डेढ़ साल में प्रदेश में दूध संकलन 25 प्रतिशत बढ़कर प्रतिदिन 12.50 लाख लीटर हो गया है। सरकार का लक्ष्य इसे 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक ले जाना है। दूध के दाम में 5 रुपये प्रति लीटर की बढोतरी भी की गई है। गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ट्रैक्टर-ट्रॉली और भूसा बनाने की मशीनें दी जाएंगी। सरकार ने आने वाले वर्षों में रकबा 100 लाख हेक्टेयर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के एक हेक्टेयर तक भूमि वाले किसानों को पांच हॉर्सपावर तक के कृषि पंप पर मुफ्त बिजली दी जा रही है। उद्यानिकी विभाग ने बताया कि अभी चार जिलों में शुरू हुई मखाना की खेती को बढ़ाकर 10 जिलों तक ले जाया जाएगा। फल, सब्जी, मसाले, फूल और औषधीय फसलों को भी बढ़ावा दिया जाएगा। लघु-कुटीर उद्योग के तहत शहद उत्पादन से भी किसान अच्छी कमाई कर रहे हैं।

कृषि उत्पादन आयुक्त अशोक वर्णवाल ने कहा कि मध्यप्रदेश पिछले 10 साल से कृषि क्षेत्र में 2 अंकों में वृद्धि कर रहा है। इस गति को बनाए रखने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देशानुसार कई विभागों को जोड़कर कृषक कल्याण वर्ष मना रहे हैं। कार्यशाला में जैविक खेती, उद्यानिकी में नर्सरी, कोदो-रागी जैसे मोटे अनाजों से आइसक्रीम निर्माण, केज कल्चर सहित अनेक महत्वपूर्ण तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। मत्स्य पालन, संस्कृति, पर्यटन, खाद्य एवं नवकरणीय ऊर्जा सहित कई विभागों ने अपनी योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की है। कृषि सचिव श्री निशांत वरवड़े ने प्रेजेंटेशन में बताया कि 11 जनवरी 2026 को कृषि कल्याण वर्ष का शुभारंभ किया गया है। दृष्टि पत्र में आत्मनिर्भर किसान, उन्नत कृषि और मूल्य-श्रृंखला आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था के माध्यम से समृद्ध प्रदेश का निर्माण करने का उल्लेख है। मध्यप्रदेश एग्रीस्टैक योजना में देश में प्रथम स्थान पर है। इसमें सभी किसानों का डेटा सिंगल क्लिक पर उपलब्ध होता है। योजना में फार्मर रजिस्ट्री, लैंड रजिस्ट्री और फसल रजिस्ट्री यानी गिरदावरी जैसे कार्य किए जा रहे हैं। ई-विकास के माध्यम से किसानों को सुगमता पूर्वक खाद वितरण कार्य किया गया है।

पशुपालन विभाग का नाम अब होगा गौपालन एवं पशुपालन

कैबिनेट में गेहूं खरीदी पर बोनस एवं सिंचाई परियोजना को मिली मंजूरी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में किसानों एवं सिंचाई और पशुपालन विभाग से जुड़े कई अहम फैसलों को मंजूरी दी गई। बैठक में रबी विपणन सीजन 2026-27 के लिए समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने वाले गेहूं पर 40 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने का फैसला लिया गया। इससे प्रदेश के किसानों को गेहूं बोनस सहित 2625 रुपये क्विंटल में खरीदा जायेगा।

इसके लिए मध्यप्रदेश स्टेट सिविल सप्लाईज कार्पोरेशन के माध्यम से खुली टेंडर प्रक्रिया अपनाई जाएगी और इस पर आने वाला खर्च राज्य सरकार उठाएगी। वहीं बोनस भुगतान के लिए अलग से बजट प्रावधान किया जाएगा, जबकि सरप्लस गेहूं के निस्तारण का खर्च मुख्यमंत्री कृषक फसल उपार्जन सहायता योजना से पूरा किया जाएगा।

कैबिनेट ने पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग का नाम बदलकर अब गौपालन एवं पशुपालन विभाग करने के फैसले को भी मंजूरी दी। इसके साथ ही संचालनालय का नाम भी संशोधित किया गया है। बैठक में सिंचाई सुविधाओं को मजबूत करने के लिये रीवा जिले की पनवार माइक्रो सिंचाई परियोजना के लिए 228 करोड़ 42 लाख रुपये मंजूर किए गए। इस प्रोजेक्ट के तहत जवा और त्योंथर तहसील के 37 गांवों में करीब 7350 हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई सुविधा मिलेगी।

एनएफएल की सुरक्षा निधि 10 लाख करने के फैसले का विरोध

संगठन ने केंद्र सरकार को भेजा ज्ञापन

भोपाल। मध्य प्रदेश के उर्वरक डीलरों के संगठन ने नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (एनएफएल) द्वारा सुरक्षा निधि को 1 लाख रुपये से बढ़ाकर 10 लाख रुपये किए जाने के फैसले का कड़ा विरोध जताया है। इस संबंध में संगठन ने केंद्रीय स्तर पर हस्तक्षेप की मांग करते हुए प्रमुख मंत्रियों और अधिकारियों को मेल भेजा है।

इस संबंध में केंद्रीय उर्वरक एवं रसायन मंत्री जे.पी नड्डा, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, फर्टिलाइजर सचिव रजत कुमार मिश्रा तथा एनएफएल के जोनल मैनेजर को पत्र लिखकर सुरक्षा निधि में की गई बढ़ोतरी को तुरंत वापस लेने की मांग की गई है। इस संबंध में प्रदेश संगठन सचिव संजय रघुवंशी ने आरोप लगाया कि सुरक्षा निधि में यह भारी वृद्धि छोटे डीलरों को बाजार से बाहर करने की साजिश प्रतीत होती है। उनका कहना है कि इससे बड़े डिस्ट्रीब्यूटरों को लाभ मिलेगा और उर्वरकों की कालाबाजारी को बढ़ावा मिल सकता है। उन्होंने यह भी आशंका जताई कि कंपनी इस निर्णय के माध्यम से व्यापारियों से करीब 330 करोड़ रुपये बिना ब्याज के एकत्रित कर हर माह लगभग 21 करोड़ रुपये कमाने का लक्ष्य बना रही है। संगठन ने यह भी सवाल उठाया है कि जब डीलर मार्जिन और वितरण में कोई जातिगत भेदभाव नहीं है, तो सुरक्षा निधि में अंतर क्यों रखा जा रहा है। इसे उन्होंने एक गंभीर अनियमितता बताते हुए तत्काल सुधार की मांग की है। इसके अलावा संगठन ने आरोप लगाया कि पिछले पांच वर्षों में निजी डीलरों को जबरन ऐसे उत्पादों के इनवॉइस दिए गए, जिनकी बाजार में मांग नहीं थी, जबकि मार्केटिंग फेडरेशन को इस प्रकार के इनवॉइस नहीं दिए गए। केंद्रीय कृषि मंत्रालय को भेजे गए पत्र में संगठन ने मांग की है कि या तो बढ़ी हुई सुरक्षा राशि को वापस लिया जाए या फिर डीलरों को 12 प्रतिशत वार्षिक ब्याज देने का प्रावधान किया जाए।

डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना का हितग्राहियों को दिलाएं लाभ : श्री पटेल

दुधारू पशु प्रदाय योजना अंतर्गत पशु वितरण कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी विभाग राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार लखन पटेल ने मंत्रालय में पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। श्री पटेल ने 1 अप्रैल को मंडला जिले के ग्राम कान्हारी कला में राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल की उपस्थिति में होने वाले मुख्यमंत्री दुधारू पशु प्रदाय योजना के अंतर्गत पशु वितरण के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की और अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में पशुपालन एवं डेयरी विभाग के प्रमुख सचिव उमाकांत उमराव, संचालक पशुपालन एवं डेयरी डॉ. पी.एस. पटेल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में श्री पटेल ने मुख्यमंत्री डेयरी प्लस योजना, कामधेनु योजना की समीक्षा एवं योजनान्तर्गत हितग्राही चयन, पशु वितरण, लक्ष्य पूर्ति, व्यापक प्रचार-प्रसार एवं सतत मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। उन्होंने मुख्यमंत्री डेयरी प्लस अंतर्गत गाय का भी प्रावधान करने का सुझाव दिया गया। इसके साथ ही स्वावलंबी गोशाला के लिए कार्य शुरू करने के लिये विभाग को प्रक्रिया को तीव्र करने, पशु प्रदायकर्ताओं की संख्या बढ़ाने एवं मापदण्ड अनुसार पशुओं की अधिकतम राशि का उल्लेख कर सूची ऑनलाइन करके हितग्राहियों को अधिक विकल्प उपलब्ध कराने एवं पशु मेला के माध्यम से पशु चयन करने पर भी चर्चा की गई। बैठक में सड़कों पर विचरण कर रहे निराश्रित पशुओं को स्वावलंबी गोशालाओं में रखने और राजमार्गों को निराश्रित पशु मुक्त बनाने के संबंध में भी चर्चा की गई।

क्यों आवश्यक है पोषणयुक्त खाद्यान्न उत्पादन ?

'किसान केवल अन्नदाता ही नहीं बल्कि पोषण दाता भी है'

इंदौर (व्यवसाय प्रतिनिधि)। पोषण से भरपूर अनाज का उत्पादन वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अत्यधिक उत्पादन लेने की होड़ में किसान भाई उत्पादित अनाज की गुणवत्ता एवं पोष्टिकता को नजर अंदाज कर रहे हैं जो वर्तमान के साथ भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। उक्त उद्गार न्यूट्रीशन कंपनी आर एम पी सी एल के सीनियर जनरल मैनेजर एंड हेड एग्रोनामिस्ट **श्री प्रमोद कुमार पांडेय** ने व्यक्त किया। श्री पांडेय ने बताया कि

असंतुलित उर्वरक उपयोग के कारण मिट्टी की उर्वरता दिनों दिन कम होती जा रही है। असंतुलित उर्वरक उपयोग से प्राप्त अनाज पोषकता से कोसों दूर होता जा रहा है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। किसान भाई सामान्यत: फसलों में दो उर्वरक डीएपी एवं यूरिया प्रयोग करते हैं जिससे फसल को आवश्यक पोषक तत्व नहीं मिल पाते। पोषकयुक्त अनाज उत्पादन के लिए 17 आवश्यक पोषक तत्वों की जरूरत होती है। फसल की बुवाई से लेकर पकने तक की अवधि के दौरान इन पोषक तत्वों का दिया जाना जरूरी है।

कैसे मिलेगा पोषण तत्वों से भरपूर अनाज?

- पोषण से भरपूर खाद्यान्न उत्पादन के लिए फसलों में दिये जाने वाले उर्वरकों के पोषक तत्व प्रबंधन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- हमें वही उर्वरक प्रयोग करना होगा जो पोषक तत्वों से भरपूर हो।
- एक ही उर्वरक में समाहित सभी आवश्यक पोषक तत्वों वाले उर्वरक का करें प्रयोग।
- देश की पहली न्यूट्रीशन कंपनी आर एम पी सी एल ने न्यूट्रीशन का सिक्सर **'महावीरा जिरोन पावर प्लस'** उपलब्ध करवाया है।
- **'महावीरा जिरोन पावर प्लस'** के उपयोग से उत्पादित अनाज फोर्टीफाइड रहता है।
- ज़िरोंन' फोर्टीफाइड अनाज पौष्टिकता से भरपूर होते है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध पोषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति.)
कैल्शियम	19 प्रतिशत
फॉस्फोरस	16 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
मैग्नीशियम	0.5 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत

क्या है 'महावीरा न्यूट्रीशन का सिक्सर'?

- **'महावीरा जिरोन पावर प्लस'** छः पोषक तत्वों से भरपूर 'सिक्स इन वन' खाद है, जो दलहनी, तिलहनी, खाद्यान्न एवं बागवानी फसलों के लिए लाभकारी है।
- इसमें 16 प्रतिशत फास्फोरस, 19 प्रतिशत कैल्शियम, 11 प्रतिशत सल्फर, 0.20 प्रतिशत बोरोन, 0.5 प्रतिशत मैग्नीशियम एवं जिंक उपलब्ध है।
- फसलों की बुवाई के दौरान 2 से 3 बैग (प्रत्येक 50 किलोग्राम) प्रयोग करके गुणवत्ता से भरपूर बेहतरीन फसल उत्पादन लिया जा सकता है।
- **'महावीरा जिरोन पावर प्लस'** के उपयोग से उत्पादन 15 से 25 प्रतिशत बढ़ जाता है।
- इसके प्रयोग से उत्पादित अनाज प्रोटीनयुक्त एवं गुणवत्ता से परिपूर्ण होता है।
- चमकदार एवं एक समान दाना होने से फसल का बाजार भाव भी अधिक मिलता है।

कैसे काम करता है 'महावीरा ज़िरोंन पावर प्लस'?

- **फॉस्फोरस:** तत्व जड़ों की वृद्धि में महत्वपूर्ण है और यह दलहनी फसलों में जीवाणुओं द्वारा नाइट्रोजन स्थिर करने में मदद करता है।
- **मैग्नीशियम:** तत्व फोटोसिन्थेसिस और फसल के प्रारंभिक विकास के लिए आवश्यक है, यह क्लोरोफिल की मात्रा को बढ़ाता है और फसल के प्रारंभिक विकास के लिए जरूरी होता है।
- **जिंक:** तत्व क्लोरोफिल उत्पादन में महत्वपूर्ण है और यह प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को भी बढ़ाता है।
- **बोरॉन:** तत्व फल, फूल लगने की प्रक्रिया को तेज कर उनकी मात्रा बढ़ाता है।
- **सल्फर:** तत्व कीटनाशक की तरह कार्य करता है साथ ही फसल की उर्वरा शक्ति बढ़ाता है।
- **कैल्शियम:** तत्व पौधों के जड़ों के विकास और अंगों की रचना के लिए आवश्यक होता है तथा पौधों को मजबूती प्रदान करता है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस से संबंधित अधिक जानकारी कंपनी के कस्टमर केयर नंबर 8956926412 पर ली जा सकती है।

साप्ताहिक सुविचार

यदि तुम अच्छा बनना चाहते हो तो अपने आपको सबसे बुरा समझो। – मुनि विद्यानंद

जायद फसलों का महत्व

कृषक दूत सम्पादकीय

प्रदेश में पिछले पांच साल के दौरान ग्रीष्मकालीन फसलों का प्रचलन बढ़ा है। रबी फसलों की कटाई के पश्चात जो खेत खाली पड़े रहते थे उन खेतों में चारों ओर हरियाली दिखती है। जिन किसानों के पास सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था है वो गर्मियों (जायद) में दलहनी तिलहनी एवं मक्का की खेती प्रमुखता से कर रहे हैं। ये फसलें किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्त्रोत भी साबित हो रही हैं। चालू जायद मौसम में 14 लाख हेक्ट्रयर में इन फसलों की बुवाई प्रस्तावित है। इसमें सबसे अधिक 11 लाख हेक्टेयर में मूंग की बुवाई की जाती है। इस साल भी यही संभावना है कि किसान भाई अधिकतम क्षेत्र में मूंग ही लगायेंगे।

राज्य सरकार के विरोधाभाषी बयान से जायद मूंग की खेती को लेकर किसानों के बीच भ्रमपूर्ण स्थिति निर्मित हुई हैं। सरकार ने किसानों से मूंग के स्थान पर उड़द की खेती करने का आहवान किया है। मूंग में अधिक कीटनाशक प्रयोग के कारण सरकार उड़द को प्रोत्साहित करना चाहती है। इसीलिए राज्य सरकार ने इस वर्ष उड़द के समर्थन मूल्य पर 600 रुपए क्विंटल बोनस देने का एलान किया है। सरकार की इस लुभाबनी घोषणा का असर कितना होगा, यह तो वक्त बतायेगा। इस संबंध में एक बात जानना आवश्यक है कि उड़द की खेती एवं मूंग में असमानता है। मूंग की फसल कम अवधि 60 से 70 दिन में पककर तैयार हो जाती है जबकि उड़द को पकने में 75 से 85 दिन लगते हैं। इस दृष्टि से खरीफ तैयारियों में किसानों को विलंब हो सकता है। इसके अलावा उड़द की फसल एक साथ पकती है जिसे हावेस्टर या रीपर इत्यादि से एक साथ काटा जा सकता है। मूंग की फसल कई बार तुड़ाई के पश्चात कटाई योग्य होती है। एक साथ न पकने के कारण खेत साफ करने के लिए किसान खरपतवार नाशी रसायनों का प्रयोग करते हैं जिसे खतरनाक श्रेणी में गिना जाता है।

मूंग एवं उड़द की खेती किसानों के लिए फायदेमंद है। बशर्ते इसमें खतरनाक कीटनाशकों का उपयोग कम से कम किया जाए। उड़द की जल्दी पकने वाली किस्मों का अनुसंधान किया जाना चाहिए ताकि किसान भाई उड़द की कटाई के पश्चात खरीफ बुवाई के लिए खेतों को तुरंत तैयार कर सकें। मूंग की भी कम अवधि एवं कीट रोग प्रतिरोधी किस्मों की जरूरत है। ये दलहनी फसलें मिट्टी को उर्वरा शक्ति प्रदान करती हैं। नाइट्रोजन की अधिकता होने से अगली फसल के लिए भी लाभकारी होती है। जायद फसलों को बढ़ावा देने के लिए सरकार को पूरा प्रयास करना चाहिए। इन फसलों की एम एस पी पर शत-प्रतिशत खरीदी करके किसानों को आर्थिक मद्द पहुंचायी जा सकती है।

देश में 27 लाख हेक्टेयर बढ़ा अतिरिक्त सिंचाई क्षेत्र : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लोकसभा में कृषि मंत्रालय की अनुदान मांगों पर हुई बहस का विस्तार से जवाब दिया।

श्री चौहान ने कहा कि बीज, खाद और कीटनाशक की गुणवत्ता किसान की असली जरूरत है। उन्होंने घोषणा की कि सरकार नया कीटनाशक और बीज अधिनियम लाने जा रही है जिसमें किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज, मानक खाद और सुरक्षित कीटनाशक सुनिश्चित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि कोई भी बायो-स्टिम्यूलेंट तभी बाजार में बिकेगा जबआईसीएआर के संस्थानों या कृषि विश्वविद्यालयों में कम से कम तीन स्वतंत्र परीक्षण उसके लाभ की पुष्टि करें। उन्होंने कहा कि लगभग 8,000 उत्पादों में से केवल लगभग 500 ही मानकों पर खरे उतरे हैं और बाकी को अनुमति नहीं दी गई।

श्री चौहान ने बताया कि डिजिटल कृषि मिशन के तहत अब तक लगभग 9 करोड़ फार्मर आईडी तैयार की जा चुकी हैं। किसान के पास फार्मर आईडी होने पर बैंक में लोन स्वीकृत होने में एक मिनट से ज्यादा नहीं लगना चाहिए क्योंकि उसकी पूरी प्रोफाइल, जमीन, फसल और लेनदेन का डेटा डिजिटल रूप से उपलब्ध होगा। उन्होंने भारत विस्तार एआई प्लेटफॉर्म का भी जिक्र किया।

श्री चौहान ने कहा कि अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों से मिट्टी की सेहत बिगड़ रही है। इसी को देखते हुए प्राकृतिक खेती मिशन के तहत 1 करोड़ किसानों को जागरूक करने, 18 लाख किसानों को प्रशिक्षित करने और 75 लाख हेक्टेयर में चरणबद्ध तरीके से प्राकृतिक खेती का लक्ष्य रखा गया है। चौहान ने बताया कि केंद्र अब हर राज्य के साथ मिलकर एग्रो-क्लाइमेटिक कंडीशन के आधार पर राज्य कृषि रोडमैप बना रहा है।

प्रदेश के हर विधानसभा क्षेत्र में खुलेंगी कृषि यंत्र की दुकानें

मुख्यमंत्री ने दिलाई किसानों को खेतों में नरवाई नहीं जलाने की शपथ

हरदा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हरदा जिले में शत-प्रतिशत कृषि रकबे में सिंचाई की सुविधा विकसित हो चुकी है। डॉ. यादव कृषि आधारित कौशल विकास एवं कस्टम हायरिंग पर केन्द्रित राज्यस्तरीय किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर आयोजित आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया और किसानों से उन्नत कृषि यंत्रों से खेती कर उत्पादन बढ़ाने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रदेश के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में कृषि यंत्र की दुकानें खोली जायेंगी। मुख्यमंत्री ने स्व-सहायता समूह की बहनों को चेक, किसानों को ड्रिप सिंचाई किट, नरवाई प्रबंधन, खाद्य प्रसंस्करण के लिए हितलाभ वितरित किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में नरवाई का समुचित प्रबंधन करते हुए जैविक एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। किसान भाई इससे जुड़ें। किसान नरवाई न जलाएं, मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में कस्टम हायरिंग द्वारा लगाई गई कृषि आधारित आधुनिक उपकरणों की प्रदर्शनी देखी।

कृषक चौपाल कार्यक्रम आयोजित

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वाधान में ग्राम मुसरा विकासखंड बुढ़ार में कृषक चौपाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति द्वारा कृषकों को जानकारी दी गई कि पौधों के विकास के लिए 17 पोषक तत्व अनिवार्य माने गए हैं। सूक्ष्म पोषक तत्वों में जिंक को भारत में मुख्य पोषक तत्वों-नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश, सल्फर, कैल्शियम और मैग्नीशियम के बाद सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व माना जाता है। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी बुढ़ार शिशुपाल राजपूत एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी लवकुश ने किसानों को बताया कि ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द की खेती किसानों के लिए 60-70 दिनों में अतिरिक्त आय और मृदा स्वास्थ्य सुधार का एक शानदार मौका है।

महावीर जयंती-31 मार्च पर विशेष

महावीर का संदेश

प्रो.(डॉ.) भागचन्द्र जैन
उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय कृषि पत्रकार संघ
20, महावीर नगर, रायपुर (छग)

आत्म-शुद्धि साधनं धर्मः,
आत्मा ही प्राण।
महावीर के सन्देश में,
प्रत्येक जीव का कल्याण॥
संसार में अब केवल बचा
है, आत्म कल्याण शेष।
अंतिम तीर्थंकर महावीर
का, जन-जन को सन्देश॥
मुक्ति होगी विपदाओं से,
मिटेंगे कष्ट क्लेश।
होगा मानव कर्म प्रधान,
महावीर का यह उपदेश॥
मन से, वचन से, कर्म से,
बनो सबके हितकारी।
जियो और जीने दो, सभी
अहिंसा के पुजारी॥
सांच बराबर तप नहीं, दया
करुणा में भगवान।
संयम अपरिग्रह का पालन
और एकाग्र ध्यान॥
सब से क्षमा, सब को क्षमा,
यही बड़ा इम्तहान।
बढ़ते रहो आगम के पथ
पर, कीजिये धर्म गुणगान॥

अनमोल वचन

द्वेष-विद्वेष से दान-धर्म मत करो
– चिन्मयसागर जी

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

चैत्र शुक्ल/बैशाख कृष्ण पक्ष विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
24 मार्च 26	मंगलवार	चैत्र शुक्ल-6	
25 मार्च 26	बुधवार	चैत्र शुक्ल-7	
26 मार्च 26	गुरुवार	चैत्र शुक्ल-8	दुर्गाष्टमी व्रत
27 मार्च 26	शुक्रवार	चैत्र शुक्ल-9	श्रीराम नवमी
28 मार्च 26	शनिवार	चैत्र शुक्ल-10	
29 मार्च 26	रविवार	चैत्र शुक्ल-11	
30 मार्च 26	सोमवार	चैत्र शुक्ल-12	प्रदोष व्रत
31 मार्च 26	मंगलवार	चैत्र शुक्ल-13	
1 अप्रैल 26	बुधवार	चैत्र शुक्ल-14	रेणुका चतुर्दशी (पूर्णिमा)
2 अप्रैल 26	गुरुवार	चैत्र शुक्ल-15	पूर्णिमा
3 अप्रैल 26	शुक्रवार	बैशाख कृष्ण-1	गुड फ्रायडे
4 अप्रैल 26	शनिवार	बैशाख कृष्ण-2	
5 अप्रैल 26	रविवार	बैशाख कृष्ण-3	
6 अप्रैल 26	सोमवार	बैशाख कृष्ण-4	

मूंग की फसल में संतुलित पोषण की नई जरूरत-ग्रोप्लस

• श्री अमित मिश्रा
डिविजनल एग्रोनामिस्ट
कोरोमंडल इन्टरनेशनल लिमिटेड, इंदौर (म.प्र.)

भारत की कृषि आज परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। बढ़ती लागत, बदलती जलवायु और मिट्टी के घटते पोषण ने किसानों को नई चुनौतियों के सामने खड़ा कर दिया है। यह स्थिति खासकर मूंग और उड़द जैसी दलहनी फसलों के लिए अधिक गंभीर है, जिन पर देश की प्रोटीन आवश्यकता का बड़ा हिस्सा निर्भर करता है।

- एक तथ्य कृषि समुदाय को विशेष रूप से चिंतित करता है
- मुख्य और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से मूंग/उड़द की पैदावार 15 से 30 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
- यह नुकसान केवल उत्पादन का नहीं, बल्कि किसान की आय और देश की पोषण सुरक्षा का भी प्रश्न है।

मूंग की फसल के लिए ग्रोप्लस क्यों आवश्यक

दलहनी फसलें पोषण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं। इनके लिए केवल नाइट्रोजन और फॉस्फोरस पर्याप्त नहीं हैं। मूंग की फसल को विकास से लेकर दाना भरने तक कई पोषक तत्वों की जरूरत होती है। इसी आवश्यकता को पूरा करने वाला एक उन्नत उर्वरक है- ग्रोप्लस।

ग्रोप्लस की प्रमुख विशेषताएं

- फॉस्फोरस की उच्च उपलब्धता
- कैल्शियम, सल्फर, जिंक और बोरान जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की मौजूदगी
- मिट्टी के भौतिक गुणों व पीएच में सुधार
- बेहतर जड़ तंत्र विकास
- अन्य उर्वरकों के साथ सहज उपयोग
- सुरक्षित और लंबे समय तकसंग्रहण योग्य

इन विशेषताओं का परिणाम है

स्वस्थ पौधा, मजबूत जड़, गहरी हरी पत्तियां, भरी हुई फलियां और उच्च गुणवत्ता वाली उपज।

ग्रोप्लस में मौजूद पोषक तत्वों की भूमिका

- **फॉस्फोरस (16 प्रतिशत)**
- जड़ों, फुटान, पुष्पन और फलन में वृद्धि
- तने की मजबूती और रोग प्रतिरोधक क्षमता
- अतिरिक्त नाइट्रोजन के दुष्प्रभाव को कम कर परिपक्वता में सहायता
- **कैल्शियम (19 प्रतिशत)**
- कोशिका भित्ति के लिए आवश्यक तत्व
- जड़ प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण
- मिट्टी की भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार
- **सल्फर**
- क्लोरोफिल निर्माण और प्रोटीन संश्लेषण
- कीट एवं रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता
- फसल की गुणवत्ता और समान परिपक्वता
- **जिंक**
- क्लोरोफिल और नई पत्तियों के विकास
- शर्करा के संतुलन और उपापचय में सुधार
- एंजाइम सक्रियता में सहायक
- **बोरान**
- पुष्पगुच्छ गठन और फलन में महत्वपूर्ण
- शर्करा संचरण और हार्मोन संतुलन
- दानों के वजन और भराव में सुधार
- डीएपी बनाम ग्रोप्लस- फर्क साफ है

जहां डीएपी केवल नाइट्रोजन और फॉस्फोरस प्रदान करता है, वहीं ग्रोप्लस+यूरिया के उपयोग से पौधे को मिलते हैं-

- नाइट्रोजन ▶▶ फॉस्फोरस ▶▶ कैल्शियम ▶▶ सल्फर ▶▶ जिंक ▶▶ बोरान, यानी संपूर्ण पोषण।

मूंग जैसी फसलें केवल डीएपी पर निर्भर रहकर अपनी पूर्ण क्षमता नहीं दिखा पातीं।

मूंग में उर्वरक उपयोग के लिए वैज्ञानिक निर्देश

- मूंग दलहनी फसल है, इसलिए इसे कम नाइट्रोजन चाहिए।
- बुवाई के 20 दिन बाद यूरिया का प्रयोग वर्जित है।
- ग्रोप्लस और पोटाश की अनुशंसित मात्रा बुवाई के पहले या साथ में देकर उत्कृष्ट परिणाम मिलते हैं।
- किसानों के लिए संदेश स्पष्ट है
- ग्रोप्लस जैसा नहीं, ग्रोप्लस खाद ही इस्तेमाल करें।
- मिट्टी, पोषण और किसान- एक नया संबंध
- मिट्टी केवल खेत नहीं, बल्कि किसान की जीवनरेखा है। इसकी सेहत बिगड़ने पर फसलें कमजोर हो जाती हैं।

संतुलित पोषण इसी वजह से इतना जरूरी है

- कमजोर जड़ें ▶▶ अधूरी फलियां ▶▶ हल्का दाना ▶▶ और कम उपज
- इन सबका कारण पोषण असंतुलन है।
- राष्ट्रीय दृष्टिकोण से मामला और भी गंभीर
- मूंग और उड़द भारत की दालों की रीढ़ हैं।

उत्पादन में गिरावट का असर सीधे

- बाजार की उपलब्धता
- दालों की कीमत
- और देश की पोषण सुरक्षा पर पड़ता है।

इसलिए मुद्दा केवल खेती का नहीं, राष्ट्र के स्वास्थ्य का भी है।

आधुनिक खेती का आधार- संतुलित पोषण

भारत की कृषि तेजी से बदल रही है, और अब समय है कि किसान भी संतुलित पोषण आधारित खेती की तरफ कदम बढ़ाएं।

ग्रोप्लस जैसे उर्वरक न केवल फसल को संपूर्ण पोषण देते हैं, बल्कि मिट्टी की सेहत और किसान की आय दोनों को मजबूत बनाते हैं।

- **कॉलम का अंतिम संदेश-** अच्छी मिट्टी, अच्छा पोषण, अच्छी फसल, अच्छा जीवन। मूंग की खेती में संतुलित पोषण अपनाना किसानों के लिए लाभ नहीं भविष्य के लिए आवश्यक निवेश है।

बड़ेरा सोपान में मसूर प्रक्षेत्र दिवस आयोजित

दतिया। कृषि विज्ञान केन्द्र, दतिया द्वारा ग्राम बड़ेरा सोपान विकासखण्ड भाण्डेर जिला दतिया में क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन-दलहन परियोजना के अंतर्गत मसूर किस्म एल-4729 का बीज कृषकों को प्रदर्शन हेतु रबी 2025-26 के लिये प्रदाय किया था। जिसके अंतर्गत मसूर प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम बद्रीप्रसाद रजक प्रगतिशील कृषक की अध्यक्षता एवं चन्द्रप्रकाश सिंह कौरव की मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. विश्वनाथ सिंह कंसाना ने किसानों को दलहन की उन्नतशील मसूर की प्रजाति के बारे में जानकारी देते हुये मसूर की उत्पादन तकनीकी का कृषक पद्धति की तकनीक से अंतर समझाया। डॉ. कंसाना ने बताया कि मसूर की यह किस्म पोषण की दृष्टि से भी उत्तम मानी जाती है क्योंकि इसमें प्रोटीन के साथ-साथ विभिन्न पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। नीकरा परियोजना के सह अनुसंधान (वाय.पी.-2) पवन दांगी ने जलवायु परिवर्तन को देखते हुये दलहन एवं तिलहन फसलों को बढ़ावा देने की बात कही एवं समसामायिक खेती करने की सलाह दी। महेश प्रसाद, संजय राजपूत, पंकज राजपूत, उमेश सिंह राजपूत, चन्द्रप्रकाश सोनी, मानसिंह राजपूत, कालीचरण, बद्रीप्रसाद, भगवानदास, राजेन्द्र सिंह, देवेन्द्र दोहरे, जीतेन्द्र राजपूत, भारत सिंह, बालकिशन पटेल सहित लगभग 100 किसानों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

● डॉ. नरेन्द्र कुमावत ● डॉ. दीपिका चौरे
अखिल भारतीय समन्वित कृषि प्रणाली
अनुसंधान परियोजना,
कृषि महाविद्यालय, इंदौर -452 001

जायद मूंग की खेती- फायदा भरपूर देती

मूंग भारत में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसमें 24 प्रतिशत प्रोटीन के साथ-साथ रेशे एवं लौह तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। मूंग दलहनी फसल होने के कारण राइजोबियम जीवाणुओं द्वारा वायुमण्डलीय नत्रजन को मृदा में संचित करने की क्षमता रखती है।

मूंग की जल्दी पकने वाली एवं उच्च तापमान को सहन करने वाली प्रजातियों के विकास के कारण जायद में मूंग की खेती लाभदायक सिद्ध हो रही है। ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती सिंचाई वाले क्षेत्रों में ही की जा सकती है। ग्रीष्मकालीन मौसम में मूंग की खेती कम लागत एवं अधिक उत्पादन लेने हेतु निम्न उन्नत तकनीकी को अपना कर अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।

भूमि एवं खेत तैयारी

मूंग की खेती के लिए हल्की से भारी भूमि उपयुक्त रहती है। मूंग को रेतीली से काली कपास वाली सभी प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है परंतु इसकी खेती के लिये अच्छे जलनिकास वाली दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है। क्षारीय एवं अम्लीय भूमि मूंग की खेती के लिये उपयुक्त नहीं होती है। जायद की फसल के लिये पलेवा देकर खेत की तैयारी करनी चाहिये। 2-3 जुताई देशी हल से करने के बाद पाटा लगाना चाहिये जिससे मृदा भुरभुरी हो जाये और भूमि में नमी संरक्षित रहे।

उन्नत किस्में

- **एस एम एल 668** - यह किस्म जल्दी तैयार होने वाली किस्मों में से एक हैं। इसकी फलियां नीचे की ओर गुच्छे के रूप में झुकी होती हैं। इस किस्म के दाने मोटे होते हैं। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर 12-15 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- **मोहिनी** - मूंग की मोहनी किस्म 70-75 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इसकी हर फली में 10-12 बीज और दाने छोटे होते हैं। मूंग इस किस्म में पीला मोजैक वायरस को सहन करने की क्षमता होती है। यह किस्म 10-12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन दे सकती है।
- **एम.यू.एम 2** - मूंग की इस किस्म का पौधा करीब 85 सेंटीमीटर ऊंचा होता है। इस किस्म के दाने का आकार में मध्यम और चमकदार लगते हैं। मूंग की ये किस्म 80-85 दिन में पक जाती है प्रति और हेक्टेयर 15-18 क्विंटल पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।
- **पूसा विशाल-** यह किस्म 70-75 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इसको जायद और खरीफ मौसम में उगाया जा सकता है। इससे प्रति हेक्टेयर 15-20 क्विंटल तक उत्पादन मिल सकती है।
- **पंत मूंग 1** - मूंग की यह उन्नत किस्म 75 दिन में पक कर तैयार होती है। इसके अलावा जायद के मौसम में फसल को 65 दिन में पक सकती है। इसके दाने छोटे होते हैं। इससे प्रति हेक्टेयर 10-12 क्विंटल पैदावार प्राप्त की जा सकती है।
- **मूंग कल्याणी-** इस किस्म की फली लंबी गुच्छों में होती है और इसका दाना मोटा और गहरे हरे रंग का चमकदार होता है। मूंग की इस किस्म से प्रति एकड़ उत्पादन 6-7 क्विंटल पैदावार प्राप्त की जा सकती है। ये किस्म पीला मोजेक, चूर्णित आसिता रोग के प्रति सहनशील है।
- **पी.एस. 16** - यह किस्म लगाने से फसल 60-65 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसका पौधा सीधा और लंबा बढ़ता है। इसके पैदावार की क्षमता प्रति हेक्टेयर 10-15 क्विंटल तक होती है। मूंग की यह किस्म बारिश और ग्रीष्म, दोनों मौसम में उपयुक्त मानी गई है।
- **मुंग की अन्य किस्में :** के. 851, पूसा वैशाली, आरएमजी 62, एम.यू.एस. 2, पूसा बैशाखी, आई.पी.एम. 205-7 (विराट), एम.एच. 421, आई.पी.एम, 410-3 (शिखा), पी.डी.एम. 139 (सम्राट) आदि ।

बीजदर एवं बीजोपचार

ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई हेतु 15-20 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। बीजों को 2.5 ग्राम थायरम अथवा 1.0 ग्राम कार्बेन्डाजिम साथ में 4-5 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। फफूंदनाशी से बीजोपचार के पश्चात् बीज को राइजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित करें। राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के लिये 25 ग्राम गुड़ तथा 20 ग्राम राइजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर को 50 मिलीलीटर पानी में अच्छी तरह से मिलाकर 1 किलोग्राम बीज पर हल्के हाथ से मिलाना चाहिये एवं बीज को 1-2 घंटे छायादार स्थान पर सुखाकर बुआई के लिये उपयोग करना चाहिये। मूंग की खेती हेतु कतार से कतार की दूरी 30 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखी जाना उपयुक्त है।

उर्वरक प्रबंधन

उर्वरक का उपयोग कृषि प्रयोगशाला से मिट्टी जांच की सिफारिश के आधार पर करें। सामान्य रूप से मूंग की फसल में 15-20 किलोग्राम नत्रजन, 40-60 किलोग्राम स्फुर तथा 20-30 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। सभी उर्वरकों को बुआई के समय डालना चाहिये।

खरपतवार प्रबंधन

सामान्यत: फसल की वृद्धि के साथ ही कई प्रकार के चौड़ी व संकरी पत्तियों वाले खरपतवार उग आते हैं, जो फसल को दिए गए पोषक तत्वों व पानी का अवशोषण कर लेते हैं, जिससे मूंग की पैदावार और गुणवत्ता में कमी आ जाती है। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुवाई से पूर्व फ्लूक्लोरोलिन 1 किग्रा/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त पेंडीमिथालिन 0.75 किग्रा/हेक्टेयर की दर से छिड़काव फसल उगने से पूर्व कर खरपतवारों से छुटकारा पा सकते है। जायद की फसल में पहली सिंचाई के 20 से 30 दिन पश्चात् एक बार फसल की निराई-गुड़ाई करें।

जल प्रबंधन

जायद में हल्की भूमि में 4-5 बार सिंचाई की जबकि भारी भूमि में 4-5 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि शाखायें बनते समय तथा दाना भरते समय भूमि में नमी पर्याप्त रहे।

रोग प्रबंधन

मूंग में फफूंदजनित रोगों में चूर्णी कवक, मैक्रोफोमिना झुलसन, सरकोस्पोरा पर्ण दाग तथा एन्थ्रेक्नोज प्रमुख हैं। इन रोगों की रोकथाम के लिये रोगरोधी किस्मों का चयन करें साथ ही उचित बीजोपचार करें। इसके अलावा बुआई के 30 दिन बाद फसल पर कार्बेन्डाजिम दवा की 600 ग्राम मात्रा 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद छिड़काव दोबारा कर सकते हैं। इसके अलावा मूंग में पीला मोजेक या पीली चितेरी रोग अधिक लगता है। यह एक विषाणुजनित रोग है जिसका एक पौधे से दूसरे पौधे में संक्रमण सफेद मक्खी द्वारा होता है। इसकी रोकथाम के लिये रोगरोधी प्रजातियां लगायें। खेत में ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रारंभ में कुछ ही रोगी पौधे होते है जिन्हें लक्षण दिखते ही उखाड़कर नष्ट कर दें और सफेद मक्खी की रोकथाम करें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड की 150 मिली या डाइमिथिएट की 500 मिली प्रति हेक्टेयर मात्रा 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें जरुरत पड़ने पर 12-15 दिन में छिड़काव दोहरायें।

कीट प्रबंधन

मूंग की फसल पर काटने वाले एवं रसचूसक दोनों प्रकार के कीटों का प्रकोप होता है। भेदक कीटों में पिस्सू भृंग, फली भेदक कीट तथा पत्ती मोड़क कीट प्रमुख हैं जिनके नियंत्रण के लिये प्रोफेनोफॉस की 1 लीटर या क्लोरेन्ट्रा-निलिट्रोल की 500 मिली या स्पाइनोसैड की 125 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से दो बार छिड़काव करें। रस चूसक कीटों जैसे सफेद मक्खी, थ्रिप्स या जैसिड्स के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड की 150 मिली या डाइमिथोएट की 500 मिली प्रति हेक्टेयर मात्रा का छिड़काव करें।

भेदक एवं रसचूसक दोनों प्रकार के कीटों का प्रकोप होने पर प्रोफेनोसाइपर दवा की 1 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर कीटों का नियंत्रण किया जा सकता है।

कटाई पैदावार एवं भंडारण

जब मूंग की 85 प्रतिशत फलियां परिपक्व हो जायें तब फसल की कटाई करें। अधिक पकने पर फलियां चटक सकती हैं। अत: कटाई समय पर किया जाना आवश्यक होता है। उन्नत तकनीकी अपना कर ग्रीष्मकालीन में मुंग की लगभग 10-12 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। कटाई उपरांत फसल को गहाई करके बीज को 9 प्रतिशत नमी तक सुखाकर भंडारण करें।

• डॉ. शुभम मिश्रा
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
आई.ई.एच.ई, भोपाल (म.प्र.)

जायद मूंग में रोग प्रबंधन से उत्पादन बढ़ाएं

मूंग भारत वर्ष की प्रमुख दलहनी फसल है जिसकी विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में खेती की जाती है। इसकी खेती सभी मौसमों में की जाती है, लेकिन अधिकांश क्षेत्रफल खरीफ मौसम में है। पिछले 8-10 वर्षों में मूंग की अनेक प्रजातियां विकसित की गयी हैं। इनमें से अधिकांश प्रजातियां प्रमुख रोगों के प्रति अवरोधी है। इसके अलावा ये शीघ्र पकने वाली फलियां, एक साथ पकने वाली तथा बड़े आकार के दाने वाली हैं। ये नवीनतम प्रजातियां अधिक उत्पादन देने वाली भी हैं।

पिछले तीन-चार सालों से मध्यप्रदेश में ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के प्रति किसानों का रुझान बढ़ा है। चालू सीजन में 10 लाख हेक्टेयर में जायद मूंग प्रस्तावित है। जायद मूंग की फसल को कई रोगों से व्यापक नुकसान होता है। प्रस्तुत आलेख में जायद मूंग रोग प्रबंधन की जानकारी दी गई है।

एन्थ्रेक्नोज

लक्षण–
- फफूंदी पादप वृद्धि की किसी भी अवस्था में ऊपरी भागों पर संक्रमण कर सकता है।
- पत्तियों एवं फलियों पर गोलाकार, काले धब्बे बीच में गहरे एवं किनारों पर नारंगी दिखाई देते हैं।
- अधिक संक्रमण की अवस्था में प्रभावित भाग एवं सीडलिंग सूख जाती है।

प्रबंधन–
- थायोफिमेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 250 से 500 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- कार्बाक्सिन+थायरम (विटावेक्स पावर) 2 से 3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।

बेक्टीरियल लीफब्लाइट

लक्षण–
- पत्तियों के ऊपर अनेक भूरे, सूखे एवं उभरे हुये धब्बे दिखाई देते हैं।
- अधिक प्रकोप की स्थिति में अनेक धब्बे आपस में मिल जाते हैं एवं पीली पड़कर समय से पूर्व गिर जाती है।
- यह बेक्टीरिया बीज जनित होता है।
- तना एवं फलियां भी संवमित होती हैं।

प्रबंधन–
- रोगमुक्त बीज का प्रयोग करें।
- फसल अवशेषों को नष्ट करें।
- बोनी से पूर्व बीज को 500 पी.पी.एम. स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के घोल में 30 मिनट तक रखें।
- स्ट्रेप्टो साइक्लिन को 3 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड के साथ प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 12 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

सरकोस्पोरा लीफस्पॉट

लक्षण–
- यह मूंग का महत्वपूर्ण रोग है जो कई रूप में फसल को अत्यधिक नुकसान पहुंचाता है।
- पत्तियों पर अनेकों छोटे आकार के भूरे एवं किनारों पर लाल भूरे धब्बे दिखाई देते हैं इसी प्रकार के धब्बे शाखाओं एवं फलियों पर दिखाई पड़ते हैं।
- यदि मौसम प्रतिकूल होता है तो फूल आने एवं फली बनते समय गंभीर पर्णदाग युक्त पत्तियां नीचे गिर जाती हैं।

नियंत्रण–
- प्रतिरोधी किस्में लगायें।
- ऊंची बढ़ने वाली धान्य फसलों के साथ अन्तरवर्ती फसल लगावें।
- खेतों को साफ-सुथरा रखें।
- रोग मुक्त बीज का प्रयोग करें।
- पौधे से पौधे एवं कतार से कतार की दूरी अधिक रखें।
- मल्चिंग करें।
- फसल पर थायोफिमेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 250 से 500 ग्राम/ हेक्टेयर या प्रोपीकोनाजोल 1 ग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें।

लीफक्रिन्कल रोग (लीफकर्ल वायरस)

लक्षण–
- सर्वप्रथम रोग के लक्षण नयी पत्तियों पर क्लोरोसिस के रूप में दिखाई देते हैं।
- पत्तियां सिकुड़कर नीचे की ओर मुड़ जाती हैं।
- प्रभावित फसल की वृद्धि रुक जाती है तथा मृत्यु हो जाती है।
- रोग मुख्य रूप से बीज या रोगग्रस्त पत्तियों के द्वारा फैलता है।

प्रबंधन–
- प्रभावित फसल के भागों के लगभग 45 दिनों तक अलग कर नष्ट कर दें।
- समय पर बोनी करें।
- रोग वाहक कीट थ्रिप्स के नियंत्रण के लिये एसीफेट 1 मि.ली./ली. का छिड़काव करें।

मेक्रोफोमिना ब्लास्ट (मेक्रोफोमिना फेजियोलिना)

लक्षण–
- रोग के लक्षण 4 सप्ताह पुरानी फसल के तने के ऊपर सफेद केंकर के रूप में दिखाई देते हैं। यह धीरे-धीरे भूरे रंग के रूप में ऊपर की ओर बढ़ते हैं।
- पौधे छोटे रह जाते हैं। पत्तियां गहरी हरी, मुरझायी हुई एवं आकर छोटा हो जाता है।
- सवंमित पौधे की सामान्य पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं।
- फूल एवं फलियां कम लगते हैं। यदि प्रभावित पौधों को लम्बवत नीचे की ओर चीरकर देखें तो अन्दर वाले ऊतकों में लालपन दिखाई पड़ता है एवं अन्दरवाली जड़ें सफेद दिखती हैं। रोगजनक बीज, भूमि रोगग्रस्त अवषेष आदि के द्वारा फैलता है।

प्रबंधन–
- गर्मी में गहरी जुताई करें।
- फलस चक्र अपनावें।
- भूमि में सड़ी गोबर की खाद 12.5 टन/हे. के हिसाब से उपयोग करने पर रोग को कम करने में सहायक होता है।
- रोगग्रस्त फसल अवशेषों को नष्ट करें।
- ट्राइकोडर्माविरिडि 4 ग्राम/कि.ग्रा. या स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स 10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज या थायोफिमेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 250 से 500 ग्राम/हेक्टेयर से बीजोपचार करें।
- रोगग्रस्त फसल पर स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स/ ट्राइकोडर्मा विरिडी 2.5 कि.ग्रा./हे. को 50 कि.ग्रा. गोबर खाद के साथ डेन्चिंग करें।

पीला मोजाइक रोग (मूंगबीन यलोमोजाइक वायरस)

लक्षण–
- शुरुआत में नयी पत्तियों के ऊपर हल्के बिखरे हुये पीले दिखाई पड़ते हैं। धीरे-धीरे धब्बे बड़े होकर पत्तियां पीली हो जाती हैं।
- ग्रस्त पौधे छोटे रह जाते हैं, देरी से परिपक्व होते हैं एवं उनमें बहुत कम फूल एवं फली बनती हैं।
- यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है।

प्रबंधन–
- बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 WS 3 ग्राम/कि.ग्रा. या थायोमेथाक्जाम 70 WS 3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से रोग वाहक के नियंत्रण हेतु बीजोपचार करें।
- रोग प्रतिरोधी किस्में लगावें।
- रोगग्रस्त पौधों को समय समय पर खेत से निकाल कर नष्ट करें।
- दैहिक कीटनाशी डाईमेथोएट 750 मि.ली./ है. या थायोमेथाक्जाम 25 WS 100 ग्राम/ है. का छिड़काव करें।

पावडरी मिल्ड्यू (इरीसीफी विगनी)

लक्षण–
- यह दलहनी फसलों का प्रमुख रोग है।
- पत्तियों एवं पौधे के अन्य भागों पर सफेद पावडरनुमा चकते दिखाई पड़ते हैं जो बाद में धीरे धीरे आकार में बड़े होकर पत्तियों की निचली सतह पर गोलाकार रूप से लेते हैं।
- संक्रमण अधिक होने पर पत्तियों की दोनों सतहें पूर्ण रूप से सफेद पावडरी वृद्धि से ढंक जाती हैं। प्रकोपित भाग सिकुड़कर नष्ट हो जाते हैं।
- अधिक संक्रमण की दशा में पर्णीय भाग पीले होकर समय से पूर्व गिर जाते हैं। रोगग्रस्त फसल में जल्दी परिपक्वता आ जाती है। एवं उपज कम हो जाती है।

प्रबंधन–
- थायोफिमेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 250 से 500 ग्राम/हेक्टे. या ट्राईडेमोर्फ1 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें।

जड़ सड़न एवं पत्ती झुलसा

लक्षण–
- रोगजनक के द्वारा बीज सड़न, जड़ सड़न, पदगलन सीडलिंग झुलसा, तना कंकर पत्ती झुलसा आदि होते हैं।
- यह रोग मुख्यत: फली अवस्था में होता है। सवंमित पत्तियां पीले पड़ जाती है तथा उन पर भूरे अनियमित धब्बे दिखाई पड़ते हैं।
- तने के मुख्य भाग एवं जड़ काले रंग की हो जाती है तथा छाल आसानी से निकल जाती है। पौधा धीरे धीरे सूखने लगता है।

प्रबंधन–
- फली अवस्था में नमी की कमी न होने देवें।
- ट्राइकोडर्माविरिडि 4 ग्राम/कि.ग्रा. या स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स 10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।
- स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स/ ट्राइकोडर्मा विरडी 2.5 कि.ग्रा. प्रति है. 50 कि.ग्रा. गोबर खाद के साथ जगह पर ड्रन्चिंग करें।

(गेरूआ) रस्ट (यूरोमाइसीज फेजियोलाई)

लक्षण–
- पत्तियों की निचली सतह पर फलियों एवं तने पर गोलाकार लाल भूरे धब्बे दिखाई पड़ते हैं।
- अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों की दोनों रस्ट के द्वारा ढंक जाती है।
- पत्तियां सिकुड़कर गिर जाती है जिससे उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रबंधन–
- पायराक्लोस्ट्रोबिन 1.5 ग्राम/लि. घोल बनाकर छिड़काव करें।

जब 80 प्रतिशत से अधिक फलियां पक जाएं तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। ज्यादा देर से कटाई करने पर फलियों से दाने झड़ने का अंदेशा रहता है। मूंग की नई किस्में ज्यादातर एक साथ पक जाती हैं, जिससे सम्पूर्ण फसल की कटाई एक साथ की जा सकती है। कटाई उपरांत फसल को 4-7 दिन तक अच्छी तरह सुखाकर मंडाई करनी चाहिए। बीज को अच्छी तरह सुखाकर ही गोदाम में रखें। यदि किसान भाई उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर जायद मूंग में रोग प्रबंधन अपनाते हैं तो उनको 12-15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मूंग की पैदावार मिल सकती है।

● डॉ. राजेंद्र पटैल ● डॉ. संजीव कुमार गर्ग
● श्री ब्रजेश कुमार नामदेव
कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)

जायद में उड़द की उन्नत खेती

जायद के मौसम में मूंग के बाद भारत में बड़े पैमाने पर उगाई जाने वाली फसल उड़द है। उड़द की फसल कम समय अवधि में पककर तैयार हो जाती है। उड़द में पोषक तत्व प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम और फास्फोरस भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। देश में उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, उत्तराखंड, आंध्र प्रदेश, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में उड़द का काफी बड़े प्रक्षेत्र में उत्पादन किया जाता है। उड़द दलहन फसल होने के कारण वायुमण्डल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके भूमि की उर्वरा शक्ति मे वृद्धि करती है।

मिट्टी एवं भूमि की तैयारी

उड़द की फसल से अच्छी उपज लेने के लिए सबसे अनुकूल बलुई दोमट मिट्टी होती है। अधिक जल भराव ना हो इसलिए उचित जल निकासी की व्यवस्था भी होनी चाहिए। पी.एच. मान 7-8 के बीच वाली भूमि उड़द के लिये उपजाऊ होती है। अम्लीय व क्षारीय भूमि उपयुक्त नही है। रबी फसलों की कटाई के बाद फसल अवशेष का समुचित प्रबंधन करके एक दो जुताई करके खेत को समतल कर बुवाई के लिए खेत की तैयारी करें।

- **जलवायु**- उड़द की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय क्षेत्र सबसे अच्छे होते हैं। गर्म और नम जलवायु में उड़द की अच्छी उपज मिलती है। उड़द फसल की अधिकतर किस्मेंप्रकाशकाल के लिये संवेदी होती है।
- **बुवाई**- उड़द की बुवाई फरवरी अंतिम सप्ताह से लेकर मार्च महीने में करनी चाहिए।
- **उन्नत किस्में**- आईपीयू 13-1, आईपीयू 17-1, कोटा उर्द -3, प्रताप उर्द-1, इंदिरा प्रथम, जवाहर उर्द-2,3
- **बीज की मात्रा**- जायद सीजन में 8 से 10 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज की मात्रा होनी चाहिए।

बीज उपचार

शुरुआती अवस्था में फफूंद जनित रोगों एवं कीटों से सुरक्षा के लिए सबसे आसान, सस्ती और लाभकारी विधि बीज उपचार होती है। बीज को कार्बेन्डाजिम (बाविस्टीन), मेंकोजेब अथवा कार्बोक्सिन थायरम (वीटावैक्स पावर) की 2 ग्राम मात्रा अथवा जैविक फफूंदनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी की 5-10 ग्राम मात्रा द्वारा द्वारा उपचारित करने के बाद बोयें। कीटों से नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफएस अथवा थायोमेथोक्साम 70 डब्ल्यूपी की 3 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करना चाहिए।

फफूंदनाशक एवं कीटनाशी दवा से उपचार के पश्चात् 5 ग्राम राइजोबियम व 5 ग्राम पीएसबी से बीज को निवेशित करना चाहिये। राइजोबियम जीवाणु, पौधों में जड़ ग्रंथियों की संख्या बढ़ाने में सहायक होते हैं जिससे भूमि में लगभग 20-25 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर वायुमंडल से स्थिर की जाती है तथा पी.एस.बी. कल्चर जमीन में स्थिर स्फुर को घुलनशील अवस्था में लाकर पौधों को उपलब्ध करवाता है।

सिंचाई

जायद सीजन में उड़द की फसल में 3-4 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। उड़द की फसल में सिंचाई 10-15 दिन के समयांतराल पर करनी चाहिए। फूल आने से लगाकर फली तैयार होने तक खेत में नमी बनी रहनी चाहिए। किसान भाइयों को ध्यान रखना चाहिए कि फूल आने की अवस्था पर सिंचाई नहीं करनी चाहिये क्योंकि फूल वाली अवस्था रुक जाती और वानस्पतिक वृद्धि शुरू हो जाती है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार फसल के साथ पोषक तत्व, जल, वायु, स्थान आदि के लिए प्रतियोगता करते हैं जिससे मुख्य फसल के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। समन्वित खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए जिससे लागत कम एवं रसायनों का फसल में कम से कम उपयोग हो। उड़द की बुवाई के बाद कम से कम 40 दिनों तक खेत में खरपतवार की निगरानी करनी चाहिए। खरपतवार होने की स्थिति में उड़द की फसल की निराई-गुड़ाई करनी चाहिए।

कीट

उड़द की खेती में कई तरह के कीट भी लगते हैं, जिनमें बालदार सुंडी, हरा फुदका, फली भृंग, बिहार रोमिल इल्ली, तम्बाकू इल्ली, अर्द्धगोलाकार इल्ली, सफेद मक्खी और फली छेदक आदि कीट शामिल हैं। फसलों में कीटों का नियंत्रण समन्वित तरीके से करना चाहिये।

एकीकृत कीट प्रबंधन

- शुरुआती अवस्था में नीले, पीले एवं सफेद चिपचिपे (10-12 कार्ड/एकड़) कार्ड लगाकर सफेद मक्खी, थ्रिप्स, एफिड, जैसिड जैसे कीटों का नियंत्रण आसानी से किया जा सकता है।
- फेरोमन ट्रैप के माध्यम से रोमिल इल्ली, तम्बाकू इल्ली, फली छेदक आदि कीटों का नियंत्रण किया जा सकता हैं।
- लाइट ट्रैप के माध्यम से प्रकाश संवेदी कीटों का नियंत्रण
- इमिडाक्लोप्रिड अथवा थायोमेथोक्साम से रस चूसक कीटों एवं इमामेक्टिन बेंजोएट, फ्लूइनडा माइट से फली छेदक एवं अन्य कीटों का नियंत्रण
- खेत की सफाई समय पर करें, पूर्व फसल के अवशेषों को एकत्र कर नष्ट करें, खेत के आस-पास खरपतवारों को न उगने दें।
- भूमि में जल निकास की ठीक व्यवस्था करें।

रोग

- उड़द की फसल को कई सारे रोग प्रभावित करते हैं। जैसे - भभूतिया रोग, पीला मोजैक रोग, जड़ सड़न, पत्ती झुलसा, एंथ्रेकनोज रोग और पत्ती धब्बा रोग आदि शामिल हैं।

एकीकृत रोग प्रबंधन

- शुरुआती अवस्था में नीले, पीले एवं सफेद चिपचिपे (10-12 कार्ड / एकड़) कार्ड लगाकर सफेद मक्खी, थ्रिप्स जैसे कीटों का नियंत्रण आसानी से किया जा सकता हैं। जिससे पीला मोजेक एवं पत्ती सिकुड़न रोग पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- सड़न, पत्ती झुलसा, एंथ्रेकनोज रोग आदि फफूद जनित रोगों के नियंत्रण हेतु Carbendazim 12% + Mancozeb 63% WP, tebuconazole 50% + trifloxystrobin 25% wg आदि फफूंदनाशी का उपयोग करना चाहिए।
- खेत की सफाई समय पर करें, पूर्व फसल के अवशेषों को एकत्र कर नष्ट करें, खेत के आस-पास खरपतवारों को न उगने दें।
- भूमि में जल निकास की ठीक व्यवस्था करें।

कटाई

- उड़द की फसल को कटाई या तुड़ाई के लिए पककर तैयार होने में करीब 70 से 80 दिन का समय लगता है। इसकी तुड़ाई 80-85 प्रतिशत फलियां पक जाने और ज्यादा संख्या में फलियां काली हो जाने पर करनी चाहिए।

मड़ाई

- उड़द की फसल को काटने के बाद धूप में सुखाकर इसकी मड़ाई कर सकते हैं। मड़ाई के बाद आप बीजों को 3-4 दिन तक धूप में सुखाने के बाद भंडारण कर सकते हैं।

फसल अवशेष संग्रहण का उपयोगी कृषि यंत्र

स्ट्रॉ रीपर : इस मशीन से कंबाइन हार्वेस्टर द्वारा कटाई के पश्चात बचे हुए गेहूँ के डंठल या खड़े ठूंठे को काटा जाता है एवं उसका बारीक भूसा बनाकर एकत्रित किया जाता है।

फायदे: ऑपरेशन गठबंधन के बाद गेहूं का पुआल पुनर्प्राप्त करें। प्राप्त गेहूँ का भूसा मवेशियों के भोजन के रूप में उपयोग किया जाता है। औसत मशीन की क्षमता 0.4 हेक्टेयर घंटे है और पुआल वसूली लगभग 55-60 प्रतिशत है। भूसा की गुणवत्ता उस तुलना के साथ तुलनीय है जो उपलब्ध थ्रेशर द्वारा बनाया गया था। 50-100 किग्रा प्रति हेक्टेयर में एक अतिरिक्त अनाज की वसूली है।

स्ट्रॉ चौपर : सभी प्रकार के फसल के अवशेषों/कूड़े जैसे कि गेहूँ, धान, मक्का, ज्वार, सूरजमुखी आदि के लिए एक आदर्श मशीन है। एक ही ऑपरेशन में यह भूसे को पीछे की तरफ काटता है और इसे जमीन पर फैलाता है। रोटावेटर या डिस्क हैरो के एकल ऑपरेशन के इस्तेमाल से कटा हुआ और फैला हुआ आसानी से दफन किया जाता है।

भूसा जमा करने का यंत्र (हे रेक) : इस मशीन का उपयोग कटे हुए भूसे एवं डंठल को एक कतार में एकत्रित करने के लिए किया जाता है। खेत में उपस्थित कटे हुए डंठल को सुखाने हेतु फैलाया जाता है।

बेलर : इसका उपयोग गेहूं फॉडर, गन्ना फलियां आदि के संकुचित अवशेषों को कॉम्पैक्ट बैल्स में संसाधित करने के लिए किया जाता है जो कि संभाल परिवहन और स्टोर करने में आसान है। दो अलग-अलग प्रकार के बेलर उपलब्ध हैं- गठरी आयताकार एवं बेलनाकार। फसल के अवशेषों को गांठों में बदल दिया जाता है जो पशु आहार और जैव ईंधन के लिए उपयोग किया जाता है। किसानों को बिजली संयंत्रों को बेल्स बेचने के लिए वैकल्पिक व्यवसाय बनाता है। वायु प्रदूषण से पर्यावरण बचाता है।

• डॉ. शुभम मिश्रा
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
आई.ई.एच.ई, भोपाल (म.प्र.)

जायद तिल को रोगों से बचायें

तिल की खेती प्रमुख तिलहन फसल के रूप में की जाती है। खरीफ की तिलहनी फसल होने के कारण तिल में कई तरह के रोग लगते हैं जो उत्पादन प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत है तिल का रोग प्रबंधन।

- **फाइलोडी रोग/पर्णताभ रोग :** यह रोग फाइटोप्लाज्मा द्वारा होता है एवं इसका संचरण ओरोसियस आरिएन्अेलीस नामक रोगवाहक कीट द्वारा फैलता है।
- **लक्षण :** रोगग्रसित पौधों में सकरी छोटी पत्तियोंयुक्त, झाड़ीनुमा, संरचना वाले होते हैं। इस रोग से ग्रसित पौधों में बीज का निर्माण नहीं होता है।

प्रबंधन

- रोग रोधी प्रजातियों का उपयोग करें।
- कुछ खास तरीके जैसे फसल चक्र प्रबंधन, बुवाई का समय, कीटों की उपस्थिति का संज्ञान की गंभीरता को प्रभावित करता है।
- इस रोग के उपचार के लिये बुवाई के 30-40 और 60 दिन बाद इमिडाक्लोरप्रिड़ 17.8 एस.एल 3 मिली दवा को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नीम तेल (5 मिली लीटर प्रति लीटर) का खड़ी फसल में छिड़काव करें।
- **तना एवं जड़ सड़न :** यह रोग पीथियम नामक फफूंद से होता है।
- **लक्षण :** इस रोग से रोगग्रस्त पौधों की जड़ें व तना भूरे रंग के हो जाते हैं तथा रोगी पौधों को ध्यान से देखने पर तना, शाखाओं, पत्तियों एवं फलियों पर छोटे-छोटे काले दाने दिखाई देते हैं। रोगी पौधे जल्दी पक जाते हैं तथा दाने अपरिपक्व रह जाते हैं। यह रोग फसल पकने की अवधि तक कभी भी हो सकता है।

प्रबंधन

- टी.के.जी. 308, एम-2, एम-4, एम-9, एमएम-26 जैसी किस्म का प्रयोग करें।
- खेत में जल निकासी का उचित प्रबंधन करना चाहिये।
- रोगग्रसित पेड़ की छाल को चाकू से हटा लें और इसके स्थान पर बोर्डेक्स पेस्ट लगायें।
- ट्राइकोडर्मा 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से 10 क्विंटल गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई पूर्व भूमि में देना प्रभावी पाया गया है।
- सरसों की खली का उपयोग करें।
- प्रभावित पौधे को कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **सर्कोस्फोरा पत्ती धब्बा अंगमारी :** यह रोग सर्कोस्फोरा सिसेमी नामक फफूंद के कारण होता है।
- **लक्षण :** इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों पर आई के समान धब्बे बनते हैं।

प्रबंधन

- बिजाई से पहले फफूंदनाशी से अवश्य उपचार करें जैसे थिओफेनेट मिथाइल 45 प्रतिशत+पाइरेक्लोस्ट्रोबिन 5 प्रतिशत को 20 से 25 मिली प्रति 10 किग्रा बीज से उपचारित करें।
- साफ-सुथरी खेती करें।
- इस रोग के उपचार के लिये कार्बेन्डाजिम+मैन्कोजेब 2.5 ग्राम दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव रोग प्रारंभ होने पर 15 दिन के अन्तर से 2 बार करें।
- **अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा :** यह रोग अल्टनेरिया सिसेमी नामक फफूंद से होता है।
- **लक्षण :** रोग की शुरुआत में पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के तारेनुमा धब्बे बनते हैं। रोग की तीव्रता अधिक होने पर पूरे पौधे में गहरे रंग के धब्बे बनते हैं।

प्रबंधन

- साफ स्वच्छ खेती करें।
- फसल के पूर्व अवशेष नष्ट करें।
- अन्तरसस्य क्रियाओं द्वारा नियंत्रण करें।
- अनुमोदित समय पर बोनी करें।
- निचले इलाकों में और बाढ़ वाले इलाके में न उगाए।
- रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़कर फेंक दे।
- सिंचाई समय पर करें।
- जे.टी.एस. 8 अनुशंसित किस्म का प्रयोग करें।
- इसके उपचार के लिये प्रोपीकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) या कार्बेन्डाजिम+मैन्कोजेब (0.25 प्रतिशत) का घोल बनाकर छिड़काव रोग प्रारंभ होने पर 15 दिन के अन्तर से 2 बार करें।
- **भभूतिया रोग :** यह रोग पोटोस्फेरा जैन्थी नामक फफूंद के द्वारा होता है।
- **लक्षण :** यह रोग सितम्बर माह के आरम्भ में पत्तियों की सतह पर सफेद चूर्ण के रूप में जम जाती है। ज्यादा प्रकोप होने पर पत्तियां पीली पड़कर सूखने से झड़ जाती हैं। पौधों की वृद्धि ठीक से नहीं हो पाती।

प्रबंधन

- बीजों को मेटालेक्सिल (अप्रोन एस.डी.) 6 ग्राम या ट्राइकोड्र्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करें।
- रोग की प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें।
- बेहतर वायु संचार के लिये पौधों के बीच में पर्याप्त जगह छोड़कर फसलों का रोपण करें।
- पहला धब्बा दिखाई देने पर संक्रमित पत्तियों को हटा दें।
- गैर संवेदनशील फसलों के साथ चक्रीकरण अपनाएं।
- अत्याधिक संक्रमण को रोकने के लिये सल्फर, पत्तियों पर नीम तेल का छिड़काव करें।
- इस रोग के उपचार हेतु घुलनशील गंधक 3 ग्राम या थिओफेनेट मिथाइल 45 प्रतिशत+पाइरेक्लोस्ट्रोबिन 5 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव बीमारी शुरू होने पर 7 दिन के अंतर से 2-3 बार करें।
- **फाइटोफ्थोरा अंगमारी :** यह रोग फाइटोफ्थोरा निकोटियाने नामक फफूंद के कारण होता है।
- **लक्षण :** रोग की शुरुआत में पत्तियों पर भूरे रंग के शुष्क छोटे धब्बे बनते हैं। जो बाद में बड़े होकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। तने पर इसका प्रकोप भूरी धारियों के रूप में दिखाई देता है। अधिक प्रकोप होने पर हानि शत-प्रतिशत हो सकती है।

प्रबंधन

- अच्छी जल निकास वाली जमीन का चयन करें।
- जवाहर तिल 306, जे.टी.एस.8, टी.के.जी. 55 जैसी किस्मों का प्रयोग करें।
- रोगग्रस्त भाग को चाकू से छिलकर बोर्डेक्स पेस्ट लगायें।
- रोग के लक्षण दिखने पर रिडोमिल एम.जेड 2.0 ग्राम, कवच 2.5 ग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर खड़ी फसल में 15 दिन के अंतर से तीन बार छिड़काव करें।
- ट्राइकोडर्मा विरडी (5 ग्राम प्रति किलोग्राम) द्वारा बीजोपचार करें।

● डॉ. सुधीर सिंह धाकड़
कृषि विज्ञान केन्द्र शाजापुर (म.प्र.)

उन्नत खेती में पौध संरक्षण यंत्रों की उपयोगिता

नेपशेक स्प्रेयर (हस्त चलित)

यह एक ऐसा कीटनाशक छिड़काव यंत्र है जो पीठ पर लादकर कियान द्वारा हाथ से चलाया जाता है। इस यंत्र द्वारा छोटे पौधे, कतार में लगी फसल आदि के ऊपर कीटनाशक एवं रसायन का छिड़काव किया जाता है।

विशेषताएं

- इसमें एक पम्प तथा एयर चेम्बर जो स्थायी रूप से 9 से 22.5 लीटर की टंकी में लगे होते हैं।
- पम्प का हेन्डल चालक के कंधे के उपर या हाथ के नीचे से निकला हुआ होता है ताकि इसे एक हाथ से चला कर दूसरे हाथ से छिड़काव किया जा सके।
- इसमें छिड़काव वाली छड़ी जिसमें नोजल लगी होती है तथा चालक के पीठ पर लटकाने हेतु दो बेल्ट लगी होती है।
- इसके पंप को लगातार चलाने पर छिड़काव का दबाव बना रहता है।

उपयोग :

- छोटे पौधों, झाड़ी एवं पंक्तियों में बोई गई फसलों पर कीटनाशक छिड़कने के लिये किया जाता है।

हाईटेक स्प्रेयर

विशेषताएं :

- पर्याप्त मात्रा में लगातार दबाव पैदा कर सकता है।
- मितव्ययी संरचना
- पंप केन्द्र में स्थापित है तथा पिस्टन का डायमीटर छोटा है। अत: सही रूप से संतुलित होने के कारण चलाने में सरल है।
- अलग किये जाने वाला टयुब्युलर स्टील फ्रेम।
- 16 लीटर क्षमता का टेंक।
- न जंग लगने वाला पी.वी.सी. पिस्टन और वॉशर।
- दाहिने/बांये हाथ से चलाने की सुविधा।
- टॉकी के उपर के बड़े होल के साथ स्ट्रेनर में बने छोटे छिद्र के कारण तरल पदार्थ भरने में आसानी।

संचालन :

- स्प्रेयर को कैसे उपयोग में ले, इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम इसे स्वच्छ पानी से चलाईये। इससे आपको इसके जोड़ो से टपकने की पुष्टि हो जायेगी।
- छिड़काव का घोल पूरी तरह छना हुआ होना चाहिये।
- टंकी का छिड़काव के घोल से स्ट्रेनर लगा कर भरें।
- शोल्डर पट्टियों को इस प्रकार कसे ताकि स्प्रेयर आपकी पीठ पर हिले-ढुले नहीं।
- आप टंकी को 11.5 लीटर मात्रा तक भर सकते हैं, ताकि बाहर छलके नहीं।
- कुछ स्ट्रोक्स लगाते ही प्रेशर वैसल में दबाव पैदा हो जायेगा।

रखरखाव :दिनभर का काम समाप्त हो जाने पर, स्प्रेयर को थोड़े समय के लिये स्वच्छ पानी से चलाये (नोजल को हटाने के बाद)। इसमें पंप बैरल/प्रेशर वैसल/डिस्चार्ज लाईन/सप्रे लांस से कीटनाषक घोल के बचे हुए कण घुलकर बाहर आ जायेंगे।

नेपशेक पॉवर स्प्रेयर

विशेषताएं :

- इसके ढांचे में उच्च घनत्व पालीथीन टंकी, ईधन टंकी, इंजन निकासी पाईप, झटका अवरोधी गद्‌दी और छिड़काव होज लगे होते हैं।
- इसका पंप समान्तर दिशा में चलता है तथा यह शक्तिशाली और स्थिर दबाव बनाए रखता है। इससे दोहरे सिलेण्डर का पंप होने से इसकी कार्यक्षमता बढ़ती है।
- इसका पिस्टन तपा हुआ और घिसावट प्रतिरोधी होता है वी (अ) आकार की पेंडिंग एक विशेष प्रकार की सामग्री से बनी होने से लम्बे समय तक चलती है इंजन में इलेक्ट्रोनिक हन प्रणाली लगी होने से इसे आसानी से चलाया जाता है और रखरखाव भी किया जाता है।
- इसका इंजन उच्च शक्ति का होने से किसी भी दबाव अनुपात में कार्य करता है। यह गैसोलिन को ईधन स्वरूप इस्तेमाल कर एक पॉवर स्ट्रोक में 1800 बार क्रेंक घुमाता है।
- बाल्व के द्वारा प्रेशर नियंत्रित होता है। छिड़काव के दबाव का भी 30 किग्रा./से.मी.2 तक आसानी से बदला जा सकता है इसकी संरचना सख्त सामग्री की होती है जिससे रखरखाव आसानी से किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल धूलीकरण (डस्टिंग) और अल्टालोवाल्यूम के लिए भी किया जा सकता है।

उपयोगिता :

बगीचे में छिड़काव जैसे- आम, सेब, चीकू, संतरा, नींबू के बगीचों में छिड़साव।

जमीनी फसलों पर छिड़काव जैसे- सब्जियां, धान, गेहूं, कपास, सोयाबीन, गन्ना, चाय, काफी इत्यादि।

सामान्य निर्देश

- इंजिन की गति अचानक नहीं बढ़ाना चाहिए, इससे इंजिन गर्म हो जाता है।
- अधिक गति से बचना चाहिए, नहीं तो इंजिन को क्षति पहुंचेगी।
- हमेशा वायु छलनी का निरीक्षण करें, यदि इसमें धुल और मिट्टी जम जायेगी तो ईधन की खपत बढ़ जायेगी एवं इंजिन की क्षमता भी कम हो जायेगी।
- चालक को दी गई निर्देश पुस्तिका पढ़कर उसके अनुरूप चलना चाहिए।
- चालक को मशीन को चलाने का अनुभव होना जरूरी है।
- कार्य करने की समय सारणी बनाकर उसे जल्द खत्म करना चाहिए।
- इसका उपयोग करने से पहले इसके इकाईयों का पूर्ण रूप से निरीक्षण कर लेना चाहिए टूटे हुये भाग को बदले और लिकेज का निरीक्षण करें।
- सुनिश्चित कर लें सभी नट बोल्ट ठीक तरह से कसे हुये हैं या नहीं एवं सुरक्षित है या नहीं।
- यदि ढीले और क्षतिग्रस्त इकाई हो तो इसका उपयोग न करें।

उपयोग : इसका प्रयोग धान/फलों और सब्जियों की फसलों पर कीट,फफूंदीनाशकों का छिड़काव हेतु उपयुक्त है।

मिस्ट ब्लोअर सह डस्टर

विशेषताएं :

- इसमें दो प्लास्टिक टैंक (एक ईंधन के लिए और एक पानी/पाउडर के लिए), इंजन, पम्प, स्प्रे हौज, रोप स्टार्टर, डिलिवरी पाईप, कट ऑफ टोंटी। कंधे की पेटी तथा एक फ्रेम लगा होता है। इसमे एक छोटा 2-स्ट्रोक 35 सी सी का पेट्रोल/केरोसीन इंजन होता है जिससे एक केन्द्र त्यागी पंखा जुड़ा होता है। यह पंखा एक उच्च वेग वायुधारा बनाता है जिसे एक 90 डिग्री एल्बो के माध्यम से प्लास्टिक के लचीले वितरण पाईप में मोड़ दिया जाता है जिसमें डाइवर्जेंट आउटलेट लगा होता है। इंजन के घूमने पर पंखा उच्च वेग वायुधारा पैदा करता है। स्प्रे का कंट्रोल वाल्व धीरे-धीरे खोला जाता है और वांछित प्रवाह दर पर नियमित किया जाता है। इस स्प्रे पम्प को डस्टिंग एवं अत्यंत कम मात्रा में कीटनाशक छिड़काव हेतु परिवर्तित किया जा सकता है।
- बोलो मिस्टब्लोअर, इंजन से चलने वाले बहुउपयोगी और लाने-ले-जाने में आसान हैं। खेती बाड़ी में कीट नियंत्रण में ये बड़े उपयोगी है।
- कपास, अंगूर की खेती, वाटिकाओं, सब्जी के बगीचों, ग्रीन हाउस, तंबाकू, चाय और चावल के खेतो में कीटनाशी व फंगसुनासी प्रयोग करने में उपयोगी है।
- सही नोजल के साथ इस्तेमाल करने पर यह 10 मीटर दूरी तक छिड़काव और 8 मीटर दूरी तक डस्ट का बिखराव कर सकता है। इसमें फैला हुआ और अचूक कोण वाला छिड़काव हो सकता है।
- इसे लम्बे समय तक धोया जा सकता, वो भी बिना परेशानी के। क्योंकि इसके गुरूत्वाकर्षण का केन्द्र ऑपरेटर की पठी के पास रहे ऐसा बनाया गया है।

प्रयोग :

यह कीटनाशक एवं फफूंदीरोधक छिड़काव के लिए उपयुक्त है। इसका प्रयोग धान, फलों एवं सब्जियों की फसल पर कीटनाशक छिड़काव के लिए किया जाता है। यह तरल एवं पाउडर के रूप मे कीटनाशकों के छिड़काव हेतु उपयोग किया जा सकता है।

- कीटनाशक और कवकनाशी के अनुप्रयोग में ▸ पंक्तिदार फसल ▸ बागवानी फसल ▸ कपास ▸ रबर (वृक्षारोपण) ▸ सब्जियों के खेत ▸ काफी वृक्षारोपण ▸ तम्बाकू ▸ काली मिर्च की लताओं ▸ हरित गृह ▸ अंगूर के बाग ▸ चावल के खेत ▸ बगीचा ▸ चाय के बागान

परिचालन

- सबसे पहले पानी के साथ स्प्रेयर इस्तेमाल करके ये चल रहा है, इसकी तसल्ली कर लें। इससे यह भी आपको पक्का भरोसा हो जाएगा कि सभी जाईंट्स लीक-प्रूफहै या नहीं।
- छिड़काव घोल अच्छी तरह हिला-मिला होना चाहिए। स्ट्रेनर को सही जगह टंकी में छिड़काव का घोल भर लें। ध्यान रखे की कट ऑफ उपकरण बंद हो। भराई छिद्र का ढक्कन कसकर बंद कर लें।
- मशीन को पीठ पर रखने से पहले इंजन को चालू करके उसे अनुकूल रफ्तार में रखें।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

• श्रीमति गीता सिंह
वैज्ञानिक, कृषि विस्तार
कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी (म.प्र.)

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई का महत्व

फसल लगाने से पहले जुताई करना हमेशा फायदेमंद रहता है। जुताई करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। मिट्टी में मौजूद कीड़े-मकोड़े और उनके अंडे ऊपर आ जाते हैं, जो धूप लगने से मर जाते हैं। जुताई से मिट्टी की उर्वरा शक्ति अच्छी होती है, जिससे पैदावार बढ़ती है। एक फसल के बाद, दूसरी फसल लगाने के पहले जुताई की जाती है। ग्रीष्मकालीन अर्थात गर्मियों की जुताई और गहरी जुताई के अपने अलग फायदे हैं।

जुताई क्या है?

फसल बुवाई से पहले खेत की मिट्टी को ऊपर-नीचे करना जुताई कहलाता है। इसे आप मिट्टी पलटने वाले हल या अन्य किसी आधुनिक कृषि यंत्र से कर सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मिट्टी में मौजूद कीड़े-मकोड़ों और उनके अंडों को मारना होता है, जिससे फसल को नुकसान न हो और पैदावार बढ़े।

ग्रीष्मकालीन जुताई

अक्सर देखा जाता है कि किसान जानकारी के अभाव में जुताई का काम बुवाई के ठीक पहले करते हैं, जबकि खरीफ की फसल के अच्छे उत्पादन के लिए रबी की फसल कटने के तुरंत बाद खेत की गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु अर्थात गर्मियों में खेत को खाली छोड़ना बहुत ही उपयोगी होता है।

ग्रीष्मकालीन जुताई कब करें?

ग्रीष्मकालीन जुताई रबी की फसल कटने के बाद और मानसून आने से पहले की जाती है।

ग्रीष्मकालीन जुताई के फायदे

- मिट्टी में सुधार होता है।
- मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- खेत की कठोर परत टूट जाती है।
- इससे मिट्टी को पौधों की जड़ों के विकास के अनुकूल बनाने में मदद मिलती है।
- मिट्टी के नीचे छुपे हानिकारक कीट, उनके अंडे, प्यूपा आदि मिट्टी की ऊपरी सतह में आ जाते हैं, जो सूर्य के सीधे संपर्क में आने से नष्ट हो जाते हैं।
- इससे फसलों में होने वाली अनेक बीमारियों जैसे सफेद लट, कटवा इल्ली, लाल भृंग की इल्ली, जड़ गलना आदि रोगों की रोकथाम में मदद मिलती है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई करके खरीफ में बोई जाने वाली दलहन, तिलहन और विभिन्न सब्जियों-भाजियों में होने वाले कीट के प्रकोप को रोका या कम किया जा सकता है।

गहरी जुताई

गहरी जुताई में सामान्य या ग्रीष्मकालीन जुताई की तुलना में मिट्टी को थोड़ी गहराई से पलटना होता है।

गहरी जुताई के फायदे

- गहरी जुताई से मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- मिट्टी में वायु का संचरण बढ़ता है, जो मित्र या लाभकारी सूक्ष्म जीवों के बढ़ने में सहायक होता है।
- गहरी जुताई से सतह पर पड़े फसलों के अवशेष और खरपतवार जमीन के अंदर गड़ जाते हैं। बाद में वही सड़कर जैविक खाद में परिवर्तित हो जाते हैं, जो कि खरीफ की फसलों के लिए महत्वपूर्ण साबित होते हैं।
- गहरी जुताई से मिट्टी की कठोरता कम हो जाती है, जिससे फसलों और सब्जियों की जड़ें आसानी से जमीन के अंदर तक फैल पाती हैं। इससे पौधों को पोषक तत्व प्राप्त करने में आसानी होती है।

जुताई करते समय सावधानियां

- जुताई के लिए मिट्टी पलटने वाला हल या खुरपे का उपयोग करें। यह गहरी जुताई के साथ मिट्टी को अच्छी तरह से पलटने में सहायक होता है।
- जुताई की गहराई 15 सेंटीमीटर तक रखना उचित रहता है। गहराई मिट्टी और फसल के प्रकार पर भी निर्भर करती है।
- फसल कटने के बाद अप्रैल से जून तक गहरी जुताई कर लेनी चाहिए।
- खेत में खरपतवार हों, तो 10-15 दिन के बाद दोबारा जुताई करें।
- सुबह और शाम के समय जुताई करना अच्छा होता है।
- जुताई करने से पहले खेत में गोबर की खाद अवश्य डालें।

मुर्गीपालन पालन प्रबंधन कौशल विकास कार्यक्रम

धार। कृषि विज्ञान केंद्र, धार द्वारा अनुसूचित जनजातियों हेतु विकास कार्ययोजना वर्ष 2025-26 के अंतर्गत एक दिवसीय मुर्गीपालन प्रबंधन जागरूकता एवं कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन डॉ. एस.एस. चौहान, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, धार के मार्गदर्शन में किया गया। इस विशेष प्रशिक्षण शिविर में जिले के जनजातीय क्षेत्रों के पशुपालकों और युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

डॉ. अंकिता पाण्डेय, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने प्रशिक्षण के मुख्य बिंदु और गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जनजातीय परिवारों की आय में वृद्धि करना और उन्हें मुर्गीपालन के आधुनिक तरीकों से जोड़ना है। मुख्य अतिथि राजेन्द्र शर्मा, प्रदेश मंत्री, भारतीय किसान संघ ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि कृषक पारंपरिक खेती के साथ-साथ मुर्गीपालन एवं मछली पालन आदि अतिरिक्त आय की गतिविधियां अवश्य करें। जी.एस. मोहनिया, उप संचालक, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग द्वारा प्रशिक्षण सत्र में पशुपालकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया और उन्हें उन्नत खेती के साथ-साथ एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। डॉ. डी.एस. मंडलोई, तकनीकी अधिकारी ने मुर्गियों में होने वाली प्रमुख बीमारियों, उनके लक्षण और समय पर टीकाकरण के महत्व को समझाया। डॉ. आर.एस. सिसोदिया, उप संचालक, पशुपालन विभाग, धार ने बताया कि कैसे सही प्रबंधन पद्धतियों को अपनाकर मृत्यु दर को न्यूनतम किया जा सकता है।डॉ. सुरेंद्र सिंह मौर्य, पशु चिकित्सक, पशुपालन विभाग धार ने प्रशिक्षण के दौरान मुर्गियों में होने वाली घातक बीमारियों जैसे रानीखेत, गम्बोरो और फाउल पॉक्स के लक्षणों की जानकारी दी।

मशरूम उत्पादन तकनीक प्रशिक्षण

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र, जावरा (रतलाम) में डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख के मार्गदर्शन में ''मशरूम उत्पादन तकनीक'' विषय पर रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सत्र में कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप तिवारी द्वारा किसानों को मशरूम उत्पादन की उन्नत तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को व्यावहारिक रूप से मशरूम उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया कराई गई। इसमें भूसे का 12 घंटे पूर्व उपचार, उपचारित भूसे की छनाई, बैग भरने एवं लटकाने की प्रक्रिया किसानों से स्वयं करवाई गई। केवीके में स्थापित मशरूम इकाई में आयोजित इस प्रायोगिक प्रशिक्षण से किसानों को सीखते हुए करने का अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे उनकी समझ एवं दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस अवसर पर किसानों को मशरूम के पोषणात्मक महत्व एवं स्वास्थ्य लाभों के बारे में भी जानकारी दी गई तथा उन्हें इसे दैनिक आहार में शामिल करने हेतु प्रेरित किया गया।

कृषि महाविद्यालय खंडवा में
कपास किसान मेला का आयोजन

खंडवा । बी.एम. कृषि महाविद्यालय में एक दिवसीय कपास किसान मेला आयोजित किया गया। यह मेला कपास अनुसंधान केंद्र की गुलाबी इल्ली प्रतिरोधकता परियोजना के अंतर्गत आयोजित हुआ, जिसमें जिले के करीब 246 कपास किसानों ने भाग लेकर नई तकनीकों की जानकारी प्राप्त की। मेले के दौरान कृषि प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें कपास अनुसंधान केंद्र, हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड लिमिटेड और पीसीआई लिमिटेड द्वारा कपास खेती से जुड़ी नई तकनीकों और उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में आईआरएम परियोजना के सह-परियोजना समन्वयक और मेला समन्वयक डॉ. प्रद्युम्न सिंह (कीट वैज्ञानिक) ने किसानों को कपास में लगने वाले कीटों की पहचान और उनके नियंत्रण के तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने खास तौर पर कपास की गुलाबी इल्ली (पिंक बॉलवर्म) से बचाव के उपायों की जानकारी दी और जैविक तरीके से कीट नियंत्रण करने की सलाह दी। कार्यक्रम में उपसंचालक कृषि नितेष यादव, आत्मा परियोजना संचालक आनंद सिंह सोलंकी, कृषि अभियंता अमित सोलंकी, आकाशवाणी कार्यक्रम प्रमुख चिन्मय शर्मा और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सतीष परसाई भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. डी.के. वाणी ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद डॉ. डी.के. श्रीवास्तव ने किसानों को जैविक कपास की किस्मों और जैविक तरीके से कपास की खेती करने के बारे में जानकारी दी। उपसंचालक कृषि नितेश यादव ने किसानों को ई-टोकन व्यवस्था, सरकारी योजनाओं और नरवाई न जलाने के बारे में जानकारी दी।

आवश्यक है समय-समय पर ट्रैक्टर की नियमित देखभाल

किसी भी ट्रैक्टर की आयु और इसके द्वारा किया गया कार्य इस यंत्र की देखरेख पर निर्भर करता है। इस यंत्र को जितनी ही अधिक सावधानी से रखा जायगा उतना ही अच्छा कार्य वह देगा और उसी के अनुसार यह टिकाऊ होगा। यदि अच्छी देखरेख की जाय तो यह शायद ही कभी कठिनाई उपस्थित करेगा। प्रायः सभी ट्रैक्टरों में कठिनाइयां इंजनों में ही होती है। इसके कारण मुख्यत: निम्नलिखित चार प्रकार के हो सकते हैं।

संपीडन कठिनाई

किसी भी इंजन को सुगमतापूर्वक आरंभ करने एवं दक्षतापूर्वक कार्य देने के लिए उचित संपीडन न होने का करण पिस्टन, पिस्टन वलय सिलिंडर, सिलिंडर, दीवारों आदि का घिसना, सिलिंडर शीर्ष या स्फुलिंग प्लग के चारों ओर चूना तथा बाल्व के नीचे कार्बन का जमा होना है।

ईंधन एवं कार्बूरेशन कठिनाई

वाल्व के कुछ बंद हो जाने, ईंधनपथ में कोई बाहरी वस्तु आ जाने, कार्बूरेटर प्लव के कहीं अटक जाने के कारण ईंधन के प्रवाह में अवरोध होता है जिससे कम ईंधन ही आ पाता है। कभी कभी वाल्व के नीचे मल जमा होने अथवा प्लव में छेद हो जाने के कारण ईंधन अधिक मात्रा में आने लगता है। कार्बूरेटर का उचित रूप से न बैठाने पर ईंधन मिश्रण दुर्बल या आवश्यकता से अधिक शक्तिशाली हो जाता है।

प्रज्वलन कठिनाई

दहनकक्ष में उचित समय पर बिजली के अच्छे स्फुलिंग का होना बहुत से नाजुक पुर्जो पर निर्भर करता है। धातु का एक कण, जल की एक बूंद या बिजली का कोई ढीला संयोजन पूरी प्रज्वलन प्रणाली में बाधा डाल सकता है। इसका अर्थ होगा विलंब और समय की क्षति। क्रैंक करते समय इंजन का प्रारंभण न होना या चलते चलते रुक जाना प्रज्वलन की कठिनाई का सूचक है।

अवधि कठिनाई

वाल्व को उचित समय पर खुलना या बंद होना चाहिए एवं पिस्टन की गति के साथ उचित समय पर स्फुलिंग का निर्माण होना चाहिए। इए समय में जरा सा भी परिवर्तन होने से अवधि संबंधी कठिनाई होती है। इससे चलते इंजन का प्रारंभ होने या सुचारु रूप से चलने में बाधा नहीं होती है, बल्कि इससे इंजन की शक्ति कम हो जाती है, इंजन अत्यंत गरम हो जाता है एवं ईंधन की खपत बढ़ जाती है। इन सारी कठिनाइयों के कारणों की ओर सदा ध्यान देते रहने से ट्रैक्टर हमेशा अच्छी अवस्था में रहता है।

(पृष्ठ 12 का शेष)

उन्नत खेती में पौध संरक्षण ...

- कंधे के पट्टों के सहारे स्प्रेयर को अपनी पीठ पर लाद लें। कंधे के पट्टों को ठीक से सही एडजस्ट कर लें ताकि आपकी पीठ पर स्प्रेयर झूलता न रहें।
- इंजन को पूरी गति पर रखें।
- तरल कट-ऑफ उपकरण चलाकर, छिड़काव शुरू करें।

ट्रेक्टर चलित बूम स्प्रेयर

विशेषताएं : स्प्रेयर में अनिवार्य रूप से एक फाइबर ग्लास या प्लास्टिक का टैंक, स्ट्रेनर के साथ पम्प असेम्ब्ली का सक्शन पाइप, प्रेशर गेज, प्रेशर रेग्युलेटर, एयर चेम्बर, डिलिवरी पाईप और नोजल सहित स्प्रे बूम लगे होते हैं। स्प्रेयर ट्रैक्टर के 3-पॉइंट लिंकेज पर आरोहित होता है। हायड्रोलिक ऊर्जा द्वारा कार्य करने वाले स्प्रेयर के पम्प को चलाने के लिए ट्रैक्टर की पी.टी.ओ. शक्ति का उपयोग किया जाता है। स्प्रे बूम मुख्यत: दो प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है : ग्राउंड स्प्रे बूम तथा ओवरहेड स्प्रे बूम। ओवरहेड स्प्रे बूम क्षेत्र में लगी लंबी फसलों पर छिड़काव के लिए तैयार किया है। इस क्षेत्र में पौधा रोपण इस प्रकार से किया जाता है की बिना रोपित की गयी 2.5 मीटर के करीब चौड़ाई की पट्टी ट्रैक्टर चलाने के लिए उपलब्ध होती है। इस प्रकार रोपित की गई पट्टी 18 -20 मीटर चौड़ी हो सकती है तथा प्रत्येक पट्टी के बाद एक अ-रोपित पट्टी ट्रैक्टर चलाने के लिए छोड़ी जानी आवश्यक है। ग्राउंड स्प्रे बूम के उपयोग हेतु ट्रैक्टर की ट्रेक चौड़ाई को ध्यान में रखकर फसल को पंक्तियों मे रोपित करना आवश्यक है। फसल की आवश्यकतानुसार एवं पम्प के निर्मातानुसार इसमें 20 की संख्या तक नोजल का प्रयोग किया जाता है इसलिए इसमें उच्च दाब एवं उच्च निर्वहन पम्प का उपयोग किया जाता है।

- यह सप्रेयर टैंक (टंकी) जो फाइबर ग्लास या प्लास्टिक से निर्मित, पम्प छलनीयुक्त चूसक पाईप प्रेशर गेज, प्रेशर नियंत्रक, एयर चेम्बर निष्कासिता पाईप स्प्रे बूम जिसमें नोजल लगी हुई है, से मिलकर बना होता है।
- इसमें पम्प ट्रैक्टर की पी.टी.ओ. की शक्ति से चलता है।
- अधिकतम रूप से इस स्प्रे बूम से स्प्रे नीचे की ओर या उपर की ओर करके किया जा सकता है।
- उपर की ओर लगाए जाने वाले बूम की रचना ऊंची फसलों के अनुरूप होती है और इस प्रकार की फसलें और ऐसी फसलें लगाते समय पंक्तियों के मध्य लगभग 2.5 मीटर की चौड़ाई ट्रैक के आने-जाने के लिए छोड़ी जाती है।
- इस प्रकार बोई गई फसलों की पट्टी 18 से 20 मीटर चौड़ी तथा प्रत्येक पट्टी के मध्य एक खाली पट्टी ट्रैक्टर के चलने हेतु छोड़ी जाती है।
- जमीन पर स्प्रे करने के लिए ट्रैक्टर की चौड़ाई को ध्यान में रखते हुए पौधों को पंक्तिबद्ध बोया जाता है।
- इसलिए छोटी फसलों में इसका इस्तेमाल उपयुक्त है। पूरा स्प्रेयर ट्रैक्टर की 3 पाईंट लिकेज पर आधारित होता है।

उपयोग : इसका प्रयोग सब्जियों एवं फूलों के बाग, लंबी फसल जैसे गन्ना, मक्का, कपास, ज्वार, बाजरा आदि में कीटनाशक छिड़काव के लिए किया जाता है।

6 एयरों ब्लास्ट स्प्रेयर

विशेषताएं :

- यह मशीन 400 लीटर की क्षमता वाली टंकी, पंप, ब्लोअर, नियंत्रक वाल्व, भराई ईकाई इच्छानुसार स्पाउट घुमाने वाले हत्थे के साथ प्रेशर रेगुलेटर (दबाव नियंत्रक) से मिलकर बनी होती है।
- स्प्रे करने वाल नोजल कीटनाशक के घोल को सेंट्रीफ्यूगल धोकनी से निष्कासित वायु के वेग से छोड़ती है।
- इसके वायु वेग के रास्ते में रसायन सूक्ष्म कणों में बटकर निश्चित दायरे में गिरते हैं, जिसे ट्रैक्टर की किसी एक दिशा में किया जाता है।
- मुख्य वायु मार्ग से निकले सूक्ष्म पानी के कण दूर क्षेत्र तक फैलकर गिरते हैं जबकि फव्वारेदार टोटी में ही लगी सहायक नोजल से ट्रैक्टर के पास वाले व बचे क्षेत्र में छिड़काव होता है।
- स्प्रेयर ट्रेक्टर के 3 पाईट लिकेज पर आधारित होकर पी.टी.ओ. शक्ति से चलता है इससे निकलने वाले हवायुक्त घोल के कणों की बौछार चौड़ाई व दिशा को समायोजित किया जाता है।

उपयोग : इसका उपयोग बागवानी के पौधों, ऊंची फसलों जैसे- गन्ना, कपास में पादप संरक्षण के लिए किया जाता है।

पौध संरक्षण यंत्रों का रखरखाव

- पौध संरक्षक यंत्रों को संग्राहक कक्ष में व्यवस्थित रूप से रखना चाहिये। सूर्य का प्रकाश यंत्रों पर नहीं पड़ना चाहिये।
- एक ही प्रकार के यंत्र एक जगह रखना चाहिये, विभिन्न प्रकार के यंत्रों को आपस में मिलाकर नहीं रखना चाहये।
- पाइप, लान्स तथा नोजल संग्रहण के समय साफकर तथा निकालकर रखना चाहिये।
- रबड़ तथा प्लास्टिक के पाइप बड़े घेरे बना कर संग्रहित करना चाहिये। छोटे घेरे बनाकर रखने से उपयोग करते समय या तो पाइप टूट जाता है या उसमें ऐंठन या दरार पड़ जाती है।
- नोजल को साफ करके, सुखाकर साफ जगह पर रखना चाहिये।
- सभी गति करने वाले भागों को सप्ताह में एक बार ग्रीस लगाना चाहिये।
- संग्रहण कक्ष में यंत्रों को रखते समय पर एक पर्ची लिखकर लगाना चाहिये, जैसे चालू हालत, साफ-सफाई व मरम्मत योग्य, पुर्जे बदलने योग्य अथवा मरम्मत योग्य नहीं है आदि।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078

देवास में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

धर्मेन्द्र सिंह राजपूत
ईडब्ल्यूएस-2, चंद्रतारा लिंकसिटी, राजोदा रोड, देवास (म.प्र.)
मो. 8839523598

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

नैनो उर्वरक उपयोग संगोष्ठी में किसानों को दी आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी

कांकेर। जिला कांकेर के अंतागढ़ स्थित आदिम जाति सेवा सहकारी समिति में इफको द्वारा नैनो उर्वरक उपयोग पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को उन्नत एवं आधुनिक कृषि तकनीकों से अवगत कराना तथा नैनो उर्वरकों के उपयोग के माध्यम से फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लेकर जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आशुतोष डनसेना, उप पंजीयक सहकारी संस्था रहे। विशेष अतिथियों के रूप में एम.के. वानखेड़े, नोडल अधिकारी जिला सहकारी बैंक जगदलपुर (कांकेर), के.एस. केराम, मृदा वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र कांकेर, अमल सिंह नरवस, अध्यक्ष आदिम जाति सेवा सहकारी समिति अंतागढ़ सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता इफको रायपुर के उप प्रबंधक दिनेश गांधी ने की, जबकि संचालन क्षेत्रीय अधिकारी एल.बी. सिंह द्वारा किया गया।

संगोष्ठी में दिनेश गांधी ने किसानों को इफको के कार्यों का परिचय देते हुए नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, नैनो जिंक एवं नैनो कॉपर के उपयोग, लाभ एवं सही प्रयोग विधि की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नैनो उर्वरकों के उपयोग से फसल की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा लागत में कमी आती है। साथ ही उन्होंने छिड़काव के उचित समय, फसल की अवस्था, बीज उपचार, जड़ उपचार एवं पत्तियों पर स्प्रे करने की सही तकनीक समझाई। जार टेस्ट की प्रक्रिया तथा नैनो उर्वरकों को अन्य कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों के साथ मिलाने की अनुकूलता पर भी विस्तार से जानकारी दी गई। एल.बी. सिंह ने किसानों को संकट हरण बीमा योजना के बारे में बताते हुए इसके लाभ, पात्रता एवं आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी दी।

वहीं मृदा वैज्ञानिक के.एस. केराम ने मृदा परीक्षण के महत्व, सूक्ष्म एवं द्वितीयक पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग तथा कार्बनिक तत्वों के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि आशुतोष डनसेना ने कहा कि नैनो उर्वरकों के उपयोग से मृदा, जल एवं पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे नई तकनीकों को अपनाकर कृषि को अधिक लाभकारी बनायें।

पी ए टी परीक्षा 8 मई से

24 से 7 अप्रैल तक भरे जायेंगे फॉर्म

भोपाल- (विशेष प्रतिनिधि) मध्यप्रदेश के तीन कृषि विश्वविद्यालयों जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर एवं महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट में बी एस सी कृषि एवं संबद्ध पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कर्मचारी चयन मंडल मध्यप्रदेश ने प्रवेश परीक्षा घोषित कर दी है। प्रि-एग्रीकल्चर टेस्ट (पी ए टी) प्रवेश परीक्षा 8 मई को आयोजित की जायेगी। ऑनलाइन मोड पर होने वाली इस परीक्षा के ऑन लाइन आवेदन 24 मार्च से 7 अप्रैल 2026 तक भरे जा सकेंगे। इस प्रवेश परीक्षा के माध्यम से बी एस सी कृषि की 1004, उद्यानिकी की 188, वानिकी 28 एवं कृषि अभियांत्रिकी की 77 सीटें कुल 1297 सीटों पर प्रवेश दिया जायेगा। ई सी बी रूल बुक के अनुसार प्रवेश क्षमता के अतिरिक्त 20 प्रतिशत सीटों पर पेमेंट सीट के रूप में प्रवेश दिया जायेगा।

अनुसूचित जाति किसानों के लिए मुर्गी पालन प्रशिक्षण

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ द्वारा अनुसूचित जाति विकास कार्यक्रम के अंतर्गत 200 किसानों के लिए उन्नत मुर्गी पालन विषय पर एक दिवसीय विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मुर्गी पालन के माध्यम से अतिरिक्त आय के अवसर प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी.एस. किरार ने कहा कि मुर्गी पालन कम लागत में शुरू होने वाला लाभकारी व्यवसाय है, जो ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने के साथ पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित करता है। उन्होंने किसानों को वैज्ञानिक पद्धति अपनाने और शासकीय योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया।

तकनीकी सत्र में डॉ. आर.के. प्रजापति सहित विशेषज्ञों ने कड़कनाथ, असील, ग्रामप्रिया एवं बनराज नस्लों के चयन, संतुलित आहार, उचित आवास, टीकाकरण एवं रानीखेत जैसी बीमारियों से बचाव पर जानकारी दी। साथ ही बायो-सिक्योरिटी उपायों पर भी जोर दिया गया। चयनित किसानों को पिंजरा घर, 20-25 चूजे एवं आहार उपलब्ध कराया जाएगा। प्रशिक्षण में किसानों ने मुर्गी पालन को आजीविका का सशक्त माध्यम मानते हुए इसे अपनाने का संकल्प लिया।

जिला स्तरीय मधुमक्खी पालन सेमीनार का आयोजन

पन्ना। कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना द्वारा राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन अंतर्गत दो दिवसीय जिला स्तरीय मधुमक्खी पालन सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. ए.के. भौमिक, अधिष्ठता कृषि एवं प्रौद्योगिकी संकाय एकेएस विश्वविद्यालय सतना द्वारा जिले में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के परिप्रेक्ष्य में मधुमक्खी पालन के महत्वता पर विशेष बल दिया। उन्होंने मधुमक्खी पालन का परिचय, इतिहास, मधुमक्खी के प्रकार, परिवार के सदस्य एवं जीवन चक्र, मधुमक्खी पालन के आर्थिक महत्व एवं लाभ शत्रु एवं बीमारी से रोकथाम तथा वार्षिक भोजन स्त्रोत के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदाय की। अर्जुन मेहरा द्वारा मधुमक्खी पालन का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। डॉ. पी.एन. त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख पन्ना द्वारा मधुमक्खी पालन से फसल उत्पादन में वृद्धि तथा अतिरिक्त आय अर्जित करने का सलाह दी गई। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों, स्वयं सेवी संस्थायें, स्व सहायता समूह द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन अतिथियों एवं कृषकों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संतोष यादव, उपाध्यक्ष जिला पंचायत पन्ना, विशिष्ट अतिथि संजीव कुमार खरे प्रमण्डल सदस्य जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर, कृषि स्थाई समिति अध्यक्ष पन्ना मिजाजीलाल पटेल, उप संचालक कृषि ओ.पी. तिवारी, परियोजना संचालक आत्मा ए.पी. सुमन, सहायक संचालक कृषि एन.पी. प्रजापति, उत्तम सिंह बागरी, पन्ना जिले के समस्त विकासखण्डों के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारीगण, वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी संजीत बागरी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन नोडल अधिकारी डॉ. आर.पी. सिंह वैज्ञानिक उद्यानिकी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ. आर.के. जायसवाल, रितेश बागोरा, जया कोरी, देशराज प्रजापति, जिले के कृषकों की बड़ी संख्या में भागीदारी रही।

इफको का विशाल किसान सम्मेलन, आधुनिक कृषि तकनीकों पर जोर

मुरैना। इफको द्वारा पुलिस परेड ग्राउंड में एक भव्य किसान सम्मेलन के साथ निःशुल्क नेत्र परीक्षण एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 5000 से अधिक किसानों ने भाग लेकर आधुनिक कृषि एवं स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इफको के अध्यक्ष दिलीप संघाणी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सहकार से समृद्धि मंत्र को देश में सहकारी आंदोलन की नई ऊर्जा का आधार बताया। उन्होंने बताया कि सहकारिता मंत्रालय के गठन के बाद अमित शाह के नेतृत्व में बीज, ऑर्गेनिक एवं निर्यात के लिए नई सहकारी समितियों का गठन किया गया है। साथ ही उन्होंने बताया कि भारत से नैनो यूरिया का निर्यात लगभग 40 देशों में हो रहा है, जो देश के लिए गर्व की बात है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि इस पहल से किसानों तक उन्नत कृषि तकनीक पहुंचाने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में नेत्र स्वास्थ्य सेवाएं भी सुलभ होंगी। उन्होंने किसानों से नैनो उर्वरकों के उपयोग को बढ़ाने और रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से बचने का आह्वान किया। सांसद शिवमंगल सिंह तोमर ने केंद्र और राज्य सरकार को किसान हितैषी बताते हुए किसानों के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। इफको के निदेशक ऋषिराज सिंह सिसोदिया ने कहा कि इफको किसानों की संस्था है, जो उन्नत गुणवत्ता के उर्वरक और नई कृषि तकनीकों के माध्यम से किसानों को सशक्त बना रही है। वहीं, इफको के मार्केटिंग डायरेक्टर डॉ. योगेंद्र कुमार ने मृदा में घटते जैविक अंश पर चिंता जताते हुए किसानों को नैनो यूरिया प्लस, नैनो डीएपी, नैनो जिंक, नैनो कॉपर, सागरिका एवं जैव उर्वरकों के उपयोग की सलाह दी। कार्यक्रम में कलेक्टर लोकेश जांगिड़, जिला पंचायत अध्यक्ष आरती गुर्जर, महापौर शारदा सोलंकी, इफको के वरिष्ठ महाप्रबंधक संजय कुलश्रेष्ठ, इफको के राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी.के. सोलंकी सहित जनप्रतिनिधि, कृषि वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। सम्मेलन के दौरान विशेषज्ञों ने किसानों को आधुनिक खेती, संतुलित उर्वरक उपयोग और उत्पादन बढ़ाने के उपायों की विस्तृत जानकारी दी।

मुख्यमंत्री मत्स्य समृद्धि योजना के तहत 'महाझींगा पालन' पर ऑनलाइन प्रशिक्षण

सिंगरौली के किसानों को मिला तकनीकी मार्गदर्शन

टीकमगढ़। मुख्यमंत्री मत्स्य समृद्धि योजना के अंतर्गत मत्स्य पालकों की आय बढ़ाने और पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक विशेष वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. सतेंद्र कुमार ने मुख्य प्रशिक्षक के रूप में सिंगरौली जिले के मत्स्य पालकों को महाझींगा पालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी दी।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. टी. आर. शर्मा के निर्देशन तथा कृषि विज्ञान केंद्र, सिंगरौली के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. जय सिंह के समन्वय में संपन्न हुआ। गूगल मीट के माध्यम से आयोजित इस सत्र में बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. सतेंद्र कुमार ने महाझींगा के जीवन चक्र एवं बीज उत्पादन की वैज्ञानिक जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि मीठे पानी में झींगा पालन एक लाभकारी व्यवसाय है। डॉ. कुमार ने बताया कि महाझींगा तालाब की तलहटी में रहता है, इसलिए इसे कार्प मछलियों के साथ सफलतापूर्वक पाला जा सकता है। केवीके टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार ने कहा कि डिजिटल माध्यम से किसानों तक तकनीकी जानकारी पहुंचाना समय की आवश्यकता है, जिससे मत्स्य उत्पादन को नई दिशा मिल रही है।

कृषि उद्यमी प्रशिक्षण परीक्षा संपन्न

कटनी। मध्य प्रदेश शासन के ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से जिले में कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित 13 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की परीक्षा सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह प्रशिक्षण जनपद पंचायत बड़वारा के अंतर्गत ग्राम पंचायत परसवारा कला में आयोजित किया गया, जिसमें 35 ऐसे महिला एवं पुरुष प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं तथा मनरेगा में 100 दिवस का कार्य पूर्ण कर चुके हैं।

प्रोजेक्ट उन्नति के तहत आयोजित इस प्रशिक्षण का संचालन स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किया गया। संस्थान के प्रबंधक पवन कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण समन्वयक अनुपम पांडे के सहयोग से प्रतिभागियों को स्वरोजगार स्थापित करने हेतु व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण के उपरांत परीक्षा का आयोजन ओमप्रकाश चतुर्वेदी (परीक्षा नियंत्रक एवं प्रमाणीकरण, रुडसेटी, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, भोपाल) के निर्देशन में किया गया। परीक्षा में कृषि विषय का मूल्यांकन रामसुख दुबे (कटनी) द्वारा तथा बैंकिंग संबंधी मूल्यांकन आशीष खरे (मैहर) द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को जलवायु एवं भूमि के प्रकार, पोषक तत्व प्रबंधन, मिट्टी परीक्षण, जैविक खाद एवं कीटनाशक निर्माण, जैविक खेती, कीट एवं रोग नियंत्रण, दलहन-तिलहन एवं सब्जी उत्पादन, स्प्रिंकलर एवं टपक सिंचाई प्रणाली, शुष्क भूमि कृषि तकनीक, एकीकृत कृषि प्रणाली, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, पशुपालन एवं पादप प्रसार तकनीक (ग्राफ्टिंग, बडिंग, लेयरिंग) तथा नर्सरी प्रबंधन जैसे विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। इसके साथ ही रासायनिक खादों के दुष्प्रभाव एवं जैविक खेती के लाभों पर विशेष जोर दिया गया। परीक्षा के सफल आयोजन में राजेश विश्वकर्मा, ओमप्रकाश तिवारी, सुनील रजक एवं अरुण रजक का विशेष सहयोग रहा।

निकरा परियोजना के अंतर्गत रबी फसलों का प्रक्षेत्र दिवस आयोजित

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र, जावरा (रतलाम) के अंतर्गत ग्राम सबलगढ़, तहसील पिपलौदा में जलवायु अनुकूल कृषि पर आधारित राष्ट्रीय नवाचार (निकरा परियोजना) के तहत रबी फसलों के प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ।

इस प्रक्षेत्र दिवस में रबी सीजन के अंतर्गत किसानों को दिए गए प्रदर्शन प्लाटों का अवलोकन कराया गया, जिनमें गेहूं (प्रजाति- एच.आई. 1650), चना (प्रजाति- आर.वी.जी. 204) एवं मसूर (प्रजाति- एल. 4727) शामिल रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को नवीनतम एवं उन्नत कृषि तकनीकों तथा बेहतर उत्पादन देने वाली किस्मों के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम के दौरान डॉ. सर्वेश त्रिपाठी ने किसानों को प्रक्षेत्र दिवस मनाने के महत्व एवं इसके उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस प्रकार के आयोजन किसानों को नई तकनीकों को प्रत्यक्ष रूप से देखने और अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि संभव होती है। निकरा परियोजना के सह-प्रधान अन्वेषक डॉ. रामधन घसवा ने रबी फसलों में उपयोग की गई नवीनतम किस्मों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में निकरा परियोजना के यंग प्रोफेशनल आदित्य प्रताप राठौर सहित कुल 38 किसान एवं महिला कृषकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में किसानों ने उन्नत किस्मों और तकनीकों को अपनाने में रुचि दिखाई तथा वैज्ञानिकों से अपने सवालों के समाधान भी प्राप्त किए।

एक माह चलेगा भूमि सुपोषण अभियान

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ में 19 को भूमि सुपोषण एवं संरक्षण अभियान की शुरुआत हुई। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ऑनलाइन माध्यम से देशभर में चलने वाले इस अभियान का शुभारंभ किया।

अभियान का मकसद किसानों को मिट्टी की सेहत सुधारने और उसे सुरक्षित रखने के लिए जागरूक करना है। जिले के करीब 40 गांवों में यह अभियान चलाया जाएगा। वैज्ञानिक किसानों को मृदा परीक्षण कराने, जैविक खाद बढ़ाने और प्राकृतिक व परंपरागत खेती अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे।

महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला

बालाघाट। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राजा भोज कृषि महाविद्यालय, बालाघाट में महिलाओं एवं छात्राओं के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की थीम महिलाओं के स्वास्थ्य, नेतृत्वता एवं रोजगार के अवसर रही, जिसमें छात्राओं को जागरूक और सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया गया।

कार्यशाला में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में डॉ. बरखा गढ़पाले (एमबीबीएस, एमडी, क्रिटिकल केयर फिजीशियन), आर.एस. हॉस्पिटल, महाराष्ट्र ऑनलाइन माध्यम से जुड़ीं। उन्होंने मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता बनाए रखने, सेनेटरी पैड के सही उपयोग तथा टैम्पून को एक सुरक्षित विकल्प के रूप में अपनाने की जानकारी दी। साथ ही ब्रेस्ट कैंसर और सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने, बचाव के उपायों और वैक्सीनेशन की अहमियत पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य डॉ. गीता हनवत ने कहा कि आज महिलाएं शिक्षा, खेल, राजनीति सहित हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। उनके प्रेरणादायक विचारों ने छात्राओं में आत्मविश्वास का संचार किया। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. पूजा गोस्वामी, अध्यक्ष महिला शिकायत निवारण प्रकोष्ठ रहीं। उन्होंने छात्राओं को आत्मनिर्भर बनने और अपनी क्षमता पहचानने का संदेश दिया। कार्यक्रम में छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए कविताएं और ओजपूर्ण भाषण प्रस्तुत किए, जिससे कार्यक्रम और अधिक आकर्षक बन गया। मंच संचालन बरखा मेश्राम द्वारा एवं आभार प्रदर्शन शिखा नेमा द्वारा किया गया। अधिष्ठाता डॉ. घनश्याम देशमुख ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

भारत का कीटनाशक उपयोग वैश्विक स्तर पर सबसे कम

क्रॉपलाइफ ने प्रमाण-आधारित बहस की मांग की

नई दिल्ली। भारत सरकार के अनुमानों के अनुसार कीट और रोग हर साल भारत में फसलों का 10-35 प्रतिशत नष्ट कर देते हैं और गंभीर प्रकोप के दौरान नुकसान इससे भी अधिक होता है। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत वैश्विक स्तर पर प्रति हेक्टेयर कीटनाशकों का सबसे कम उपयोग करने वाले देशों में से एक है। भारतीय किसान आमतौर पर 0.3-0.6 किलोग्राम कीटनाशक प्रति हेक्टेयर लगाते हैं, जबकि कई यूरोपीय देशों में यह 2-4 किलोग्राम, चीन में लगभग 13 किलोग्राम और पूर्वी एशिया के कुछ हिस्सों में 10 किलोग्राम से अधिक है।

क्रॉपलाइफ इंडिया के महासचिव दुर्गेश चंद्रा ने कहा इस व्याख्या का उद्देश्य कीटनाशकों के आसपास अधिक संतुलित और प्रमाण-आधारित बातचीत को प्रोत्साहित करना है। फसल संरक्षण उत्पाद कीटों और रोगों से फसलों की रक्षा करने और किसानों को उपज सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संगठन ने नोट किया कि भ्रांतियां जैसे कि कीटनाशकों का व्यापक रूप से अत्यधिक उपयोग या अनियमित होना अक्सर भारत के तुलनात्मक रूप से कम उपयोग स्तरों और उत्पाद मूल्यांकन एवं अनुमोदन की संरचित प्रणाली को नजरअंदाज कर देती हैं। मिथक-बनाम-तथ्य वाली यह व्याख्या कीटनाशक सुरक्षा, अवशेष प्रबंधन, पर्यावरणीय प्रभाव और नियामक नियंत्रणों से संबंधित प्रमुख मुद्दों को स्पष्ट करने का प्रयास करती है, जो वैज्ञानिक प्रमाणों और आधिकारिक आंकड़ों पर आधारित है।

मिथक: कीटनाशक कैंसर का कारण बनते हैं।

तथ्य: भारत में हर कीटनाशक को इस्तेमाल से पहले सरकार सख्ती से जांचती है। केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति स्वास्थ्य जोखिम, पर्यावरण प्रभाव और खाद्य अवशेषों की जांच करती है। सही लेबल निर्देशों और तय सीमा में इस्तेमाल करने पर उपभोक्ताओं में कैंसर का जोखिम नहीं बढ़ता। किसानों को लेबल पढ़ना, सुरक्षा उपकरण (मास्क, दस्ताने) पहनना और ट्रेनिंग लेनी चाहिए, इससे जोखिम बहुत कम हो जाता है।

CropLife India Stewardship Initiatives

मिथक: कीटनाशक कभी खत्म नहीं होते।

तथ्य: आजकल के ज्यादातर कीटनाशक मिट्टी और पानी में जल्दी टूट जाते हैं। यह उत्पाद, मिट्टी की स्थिति और मौसम पर निर्भर करता है। लेबल पर सही मात्रा और कटाई से पहले प्रतीक्षा अवधि साफ लिखी होती है।

मिथक: सारे कीटनाशक शुद्ध जहर हैं।

तथ्य: हर उत्पाद की विषाक्तता अलग-अलग होती है। सबकी अलग जांच होती है और अलग सुरक्षा श्रेणी में रखा जाता है। लेबल पर सुरक्षित मात्रा, इस्तेमाल का तरीका और इंतजार समय स्पष्ट लिखा रहता है।

मिथक: जैविक खेती में कोई केमिकल नहीं होता।

तथ्य: जैविक खेती में भी कुछ अनुमोदित कीटनाशक इस्तेमाल होते हैं जैसे नीम का अर्क और पाइरेथ्रम। प्राकृतिक हो या सिंथेटिक, दोनों को सुरक्षा जांच पास करनी पड़ती है।

मिथक: कीटनाशक अच्छे कीड़ों को मार देते हैं।

तथ्य: अब किसान समेकित कीट प्रबंधन अपनाते हैं जिसमें जैविक नियंत्रण, निगरानी और जरूरत पड़ने पर ही लक्षित कीटनाशक। सही समय और मात्रा में इस्तेमाल करने पर मधुमक्खी और फायदेमंद कीड़ों को कम नुकसान होता है।

मिथक: भूजल पूरी तरह खराब हो जाएगा।

तथ्य: पर्यावरण पर असर ज्यादातर इस्तेमाल के तरीके पर निर्भर करता है। कई कीटनाशक मिट्टी से मजबूती से जुड़ जाते हैं, भूजल तक नहीं पहुंचते। ज्यादा मात्रा या गलत इस्तेमाल से ही समस्या होती है।

मिथक: बिना कीटनाशक के खेती हो सकती है।

तथ्य: फसल संरक्षण के बिना कीट प्रकोप से 30-50 प्रतिशत तक उपज खराब हो सकती है। इससे किसानों की कमाई घटती है और देश की खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है।

मिथक: किसान कीटनाशकों से जहर खा जाते हैं।

तथ्य: सुरक्षित इस्तेमाल जरूरी है। सुरक्षा उपकरण, उचित ट्रेनिंग और लेबल के अनुसार इस्तेमाल से जोखिम बहुत कम हो जाता है।

मिथक: उद्योग सच्चाई छुपाता है।

तथ्य: मंजूरी के लिए कंपनियां स्वास्थ्य, पर्यावरण और अवशेषों पर पूरी जानकारी देती हैं। नियामक सब जांच के बाद ही उत्पाद को हरी झंडी देते हैं।

यह स्पष्टीकरण किसानों की वास्तविक चुनौतियों को समझते हुए जिम्मेदार फसल संरक्षण को बढ़ावा देने की कोशिश है।

आरसीएफसी सेंटर भविष्य में पूरे देश में नई दिशा प्रदान करेगा : डॉ. दधीच

जबलपुर। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के पादप क्रिया विज्ञान विभाग के तत्वाधान में कृषि महाविद्यालय, जबलपुर में दो दिवसीय औषधीय पादपों पर राष्ट्रीय स्तर का क्रेता-विक्रेता सम्मेलन डॉ. महेश कुमार दधीच, सीईओ, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के मुख्यआतिथ्य एवं अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे की अध्यक्षता में किया गया।

सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में वेटरनरी यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. मनदीप शर्मा, भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं मुख्य वक्ता डॉ. दिनेश कुलकर्णी, राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय एग्रो इकोनॉमी सेंटर, नई दिल्ली, प्रमोद चौधरी, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर डॉ. जयंत भट्ट, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अमित शर्मा, डॉ. अखिलेश तिवारी, डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी उपस्थित थे। डॉ. दधीच ने कहा कि यह सम्मेलन औषधीय पौधों के क्षेत्र में उभरते रुझानों पर मंथन और भविष्य की रणनीति विषय पर एक बेहतरीन मंच है। ऐसे कार्यक्रमों से किसानों, उद्योगों, व्यापारियों, मार्केट और शोध संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होगा, ताकि इस क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हो सके। आरसीएफसी सेंटर, मध्यक्षेत्र के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. महेश ने कहा कि यह केन्द्र मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में ही नहीं काम करेगा अपितु भविष्य में पूरे देश में नई दिशा प्रदान करेगा। वेटरनरी यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. मनदीप शर्मा ने लोगों को फिर से औषधीय पौधों के प्रति जागरूक होने और किसानों को इसकी खेती एवं बेहतर कृषि पद्धतियों तथा फसल कटाई के बाद की उन्नत कार्यप्रणालियों को विकसित करने पर जोर दिया।

केंद्रीय पुस्तकालय में विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धक शैक्षणिक भ्रमण

ग्वालियर। राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर स्थित केंद्रीय पुस्तकालय में शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भिंड के 500 से अधिक विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के साथ शैक्षणिक भ्रमण किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को आधुनिक पुस्तकालय प्रणाली एवं डिजिटल संसाधनों की जानकारी दी गई।

भ्रमण के दौरान केंद्रीय पुस्तकालय के प्रभारी डॉ. रमेश नलावड़े एवं सहायक ग्रंथालयाध्यक्ष डॉ. हरीश भावे उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को पुस्तकालय के विभिन्न विभागों का विस्तृत भ्रमण कराया। विद्यार्थियों को पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों, ई-बुक्स, डिजिटल सामग्री एवं लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर के उपयोग के बारे में जानकारी दी गई, जिससे वे आधुनिक अध्ययन के तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित हुए। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञों द्वारा संतोषजनक समाधान किया गया। इस शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ी तथा पुस्तकालय के महत्व को समझने का अवसर मिला।

न्यू हॉलैंड ने मप्र में 3032 TX स्मार्ट और 3600 TX सुपर मॉडल किया लांच

भोपाल। न्यू हॉलैंड एग्रीकल्चर ने मध्य प्रदेश में अपने लोकप्रिय मॉडलों- 3032 TX स्मार्ट और 3600 TX सुपर की अगली पीढ़ी का अनावरण किया। नए डिजाइन, बेहतर संचालन सुविधा और उन्नत ईंधन दक्षता के साथ, ये नवीनतम अपग्रेड भारत की बदलती कृषि आवश्यकताओं के लिए निर्मित उन्नत और विश्वसनीय ट्रैक्टरों की न्यू हॉलैंड की विरासत को और मजबूत करते हैं।

न्यू हॉलैंड 3032 TX स्मार्ट अब एक नए रूप में उपलब्ध है। एक बहु-उपयोगी ट्रैक्टर के रूप में डिजाइन किए गए इस उन्नत मॉडल में रिवर्स पीटीओ, स्ट्रेट एक्सल प्लेनेटरी ड्राइव और साइड-शिफ्ट गियरबॉक्स के साथ कॉन्स्टेंट मेश एएफडी जैसी कई स्मार्ट तकनीकें हैं, जो बेहतर ईंधन दक्षता, बढ़ी हुई उत्पादकता और बढ़ी हुई संचालन सुविधा प्रदान करती हैं। नई स्टाइल और व्यावहारिक अपग्रेड इसे कृषि और वाणिज्यिक दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

3600 TX सुपर को एक नए और दमदार अवतार में पेश किया गया है। FPT इंजन तकनीक से लैस यह मॉडल मध्य प्रदेश की विविध मिट्टी की स्थितियों के लिए आवश्यक मजबूत टॉर्क और ईंधन दक्षता प्रदान करता है। इसमें उच्च PTO आउटपुट, 16F+4R गियरबॉक्स, 2000 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्ट क्षमता और बेहतर स्थिरता और भारी-भरकम खेत के काम के लिए स्ट्रेट एक्सल प्लेनेटरी ड्राइव जैसी विशेषताएं हैं। इसका 4WD वेरिएंट बेहतर आकर्षण प्रदान करता है, जिससे जुताई, रोटावेटर का उपयोग, ढुलाई और गहरी मिट्टी की जुताई जैसे चुनौतीपूर्ण कार्य सुनिश्चित होता है। 3600 TX सुपर मध्य प्रदेश की प्रमुख फसलों- सोयाबीन, गेहूं, चना और मक्का के लिए आदर्श है।

इस अवसर पर न्यू हॉलैंड एग्रीकल्चर के भारत में विपणन निदेशक ***श्री तरुण खन्ना*** ने कहा मध्यप्रदेश भारत के सबसे महत्वपूर्ण कृषि प्रधान राज्यों में से एक है, जहाँ विविध फसलें, अलग-अलग प्रकार की मिट्टी और आधुनिक मशीनीकरण का बढ़ता उपयोग होता है। 3032 TX स्मार्ट और 3600 TX सुपर के उन्नत संस्करण, आधुनिक डिजाइन और बेहतर प्रदर्शन का सहज मिश्रण प्रदान करने वाले ट्रैक्टर उपलब्ध कराने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं। ये उन्नत तकनीकें किसानों को हर मौसम में बेहतर दक्षता, अधिक आराम और बेहतर उत्पादकता प्रदान करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। न्यू हॉलैंड का लक्ष्य मध्य प्रदेश के किसानों को बेहतर दक्षता, मजबूत प्रदर्शन, बेहतर आकर्षण और ऑपरेटर को अधिक आराम देने वाले ट्रैक्टर उपलब्ध कराना है।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

रबी फसलों की कृषि कार्यमाला
फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन
धान की उन्नत खेती
सब्जियों की उन्नत तकनीकी
फसलों में कीट रोग प्रबंधन
सब्जियों में पोषक तत्व प्रबंधन
फूलों की खेती
धान की उन्नत खेती
सोयाबीन की खेती
खरीफ फसलों की खेती
कपास की खेती
गन्ने की खेती
पशुपालन
बकरी पालन
जैविक खेती
वर्मी कम्पोस्ट मार्गदर्शिका
खरपतवार प्रबंधन
भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके
कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव
दलहनी फसलों की खेती
तिलहनी फसलों की उन्नत खेती
गुलाब की खेती
फलों की उन्नत खेती
ट्रैक्टर का रखरखाव
मिर्च की उन्नत खेती
फलों का औष. उपयोग
मधुमक्खी पालन

कृषक दूत
मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म
कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 16 (म.प्र.) फोन- 0755- 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...
संस्था का नाम...
पूरा पता...
ग्राम.................................पोस्ट.................................तहसील ....
जिला.................................राज्य.................................पिन कोड
दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते से पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)........................... (शब्दों में)...
बैंक का नाम........................... ड्राफ्ट चेक क्रमांक...........................
दिनांक........................... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान........................... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य
दिनांक........................... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

अधिक जानकारी के लिए मिस्ड कॉल करें-7412063607, न्यू हॉलैंड की डीलरशिप लेने के लिए संपर्क करें : newhollandindia@cnhind.com/टोल फ्री नं. 1800-419-0124

Hero
WORLD'S NUMBER 1
FOR 25 YEARS IN A ROW
5 करोड़ सपनों की कहानी.
एक भरोसे की ज़ुबानी.
नया Splendor+ XTEC 2.0
एक्स-शोरूम कीमत ₹80,964*
TOLL FREE NO. 1800-266-0018
Splendor+ WORLD'S NO.1 MOTORCYCLE